नाम किताब	:	**मुसम्मा बनाम तारीख़ी अल-मल्फ़ूज़**
लेखक	:	मुफ़्ती-ए-आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी कुद्देसे सिर्रुहू
बइहतमाम	:	हाफ़िज़ मुहम्मद क़मरुद्दीन रज़वी
कम्पोज़िंग	:	रज़वी कम्प्यूटर प्वाइंट, दिल्ली-6
प्रूफ़-रीडिंग	:	मंज़ूरुल-हक़ जलाल निज़ामी
हिन्दी एडीशन	:	पहली बार 2013
प्रकाशक	:	रज़वी किताब घर, दिल्ली-6
पेज	:	416
तादाद	:	1100
क़ीमत	:	160

بسم الله الرحمن الرحيم

मुसलमानाने आलम के लिए एक आला तरीन

इस्लामी दस्तूरुल-अमल

यानी

मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत

रज़ि अल्लाहु अन्हु

मुसम्मा बनाम तारीख़ी

अल-मल्फ़ूज़

1338 हिजरी

हिस्सा अव्वल

लेखक

शहज़ादए आला हज़रत ताजदारे अहले सुन्नत मुफ़्ती-ए-आज़म मौलाना मुस्तफ़ा रज़ा बरैलवी कुद्देसे सिर्रुहू

प्रकाशक

रज़वी किताब घर

423, उर्दू मार्किट, मटिया महल, जामा मस्जिद,
दिल्ली-110006 ★ Phone : 011 - 23264524

मुसलमानाने आलम के लिए एक आला तरीन
इस्लामी दस्तूरुल– अमल

यानी

मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत मुजद्दिद दीन व मिल्लत
रज़िअल्लाहु तआला अन्हु

M-09825696131

मोसम्मा बनाम तारीखी

अल' मल्फूज़

1338 हिजरी हिस्सा सोम

लेखक

मुफ़्ती–ए–आज़म मौलाना
मुस्तफा रज़ा बरैलवी कुद्दिसा सिर्रहू
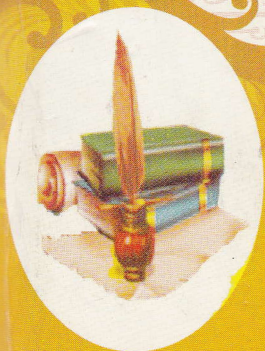
प्रकाशक

रज़वी किताब घर दिल्ली-६

दाख़िल हैं कि उनको पैदा फ़रमा चुका है।

इरशाद : नहीं बल्कि बहुत सी चीज़ें वह हैं जो मुम्किन हैं और पैदा न फ़रमाएं मसलन कोई शख़्स ऐसा पैदा कर सकता है कि सर आसमान से लग जाए मगर पैदा न फ़रमाया।

अर्ज़ : हुज़ूर क्या जिन्न व परी भी मुसलमान होते हैं।

इरशाद : हाँ (और इसी तज़्किरा में फरमाया) एक परी मुशर्रफ़ बइस्लाम हुई और अक्सर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुआ करती थी एक बार अरसा तक हाज़िर न हुई जब हाज़िर हुई। सबब दरयाफ़्त फरमाया। अर्ज़ की हुज़ूर मेरे एक अज़ीज़ का हिन्दुस्तान में इंतिक़ाल हो गया था वहाँ गई थी, राह में मैंने देखा कि एक पहाड़ पर इबलीस नमाज़ पढ़ रहा है। मैंने उसकी यह नई बात देख कर कहा कि तेरा तो काम नमाज़ से ग़ाफ़िल कर देना है तू खुद कैसे नमाज़ पढ़ता है। उसने कहा कि शायद रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला मेरी नमाज़ क़बूल फ़रमाए और मुझे बख़्श दे।

अर्ज़ : ज़ैद मुहम्मद शेर मियाँ साहब पीली भीती से बैअ़त हुआ थोड़ा अरसा हुआ कि उनका विसाल हो गया अब किसी और का मुरीद हो सकता है।

इरशाद : तब्दीले बैअ़त बिला वजहे शरई मम्नूअ् है और तज्दीद जाइज़ बल्कि मुस्तहब है सिलसिला आलिया क़ादरीया में न हुआ हो और अपने शैख़ से बग़ैर इंहिराफ़ किए इस सिलसिल-ए-आलिया में बैअ़त करे यह तब्दीले बैअ़त नहीं बल्कि तज्दीद है कि जमीअ् सलासिल इस सिलसिला आला की तरफ़ राजे हैं। (इसी सिलसिला में इरशाद हुआ) तीन क़लन्दर निज़ामुल-हक़ वालिदैन महबूब इलाही कुद्दिसा सिर्रुहू अल-अज़ीज़ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और खाना मांगा खुद्दाम को लाने का हुक्म फ़रमाया ख़ादिम ने जो कुछ उस वक़्त मौजूद था उनके सामने रखा उन में से एक ने वह खाना उठा कर फेंक दिया और कहा अच्छा खाना लाओ हज़रत ने इस नाशाइस्ता हरकत का कुछ ख़्याल न फ़रमाया खुद्दाम को उस से अच्छा लाने का हुक्म फ़रमाया ख़ादिम पहले से अच्छा लाया उन्होंने फिर फेंक दिया और उस से भी अच्छा मांगा हज़रत ने और अच्छे का हुक्म दिया ग़रज़ उन्होंने इस बार भी फेंक दिया और उस से भी अच्छा मांगा उस पर उस क़लन्दर को अपने पास बुलाया और कान में इरशाद फरमाया कि यह खाना उस

रहमतुल्लाहि तआला अलैहि नमाज़े फज्र के लिए मस्जिद में तशरीफ़ लाए देखा कि मिंबर पर एक बच्चा बैठा है सिवा हज़रत के किसी ने न देखा आपने कुछ तअर्रुज़ न फ़रमाया नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ ले आए। फिर जुहर के लिए आए तो देखा कि एक जवान बैठा है नमाज़ पढ़ कर चले आए और उस से कुछ न कहा फिर अस्र के लिए गये तो वहीं मिंबर पर एक बूढ़े को पाया अब भी कुछ न पूछा और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर वापस आए फिर मग़्रिब के लिए गये तो एक बैल को वहाँ देखा अब फ़रमाया तो क्या है इतनी मुख़्तलिफ़ हालतों में मैंने तुझे देखा है उसने कहा मैं वबा हूँ अगर आप इस वक़्त मुझ से कलाम करते जब मैं बच्चा था तो यमन में कोई बच्चा बाक़ी न रहता और अगर उस वक़्त दरयाफ़्त फ़रमाते जब मैं जवान था तो यहाँ कोई जवान न रहता यूं ही अगर उस वक़्त बात करते जब मैं बुड्ढा था तो उस शहर में कोई बूढ़ा न रहता अब आपने इस हाल में कि मुझे बैल देखा कलाम फ़रमाया यमन में कोई बैल न रहेगा यह कह कर ग़ायब हो गया यह अल्लाह तआला की अपने बन्दों पर रहमत थी कि आपने पहली तीन हालतों में उस से सवाल न फ़रमाया बैलों में मर्ग आम हो गई अगर उस वक़्त कोई बैल अच्छा भी ज़िबह किया जाता तो उसका गोश्त ऐसा ख़राब होता कि कोई खा न सकता। उसमें गन्धक की बू आती उन्हें सैयद मुहम्मद यमनी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के एक साहबज़ादे मादर ज़ाद वली थे एक मरतबा जब उमर शरीफ़ चन्द साल की थी बाहर तशरीफ़ लाए और अपने वालिद माजिद की जगह तशरीफ़ रखी एक शख़्स से कहा लिख *फुलां फ़िल-जन्नह* यानी फुलां शख़्स जन्नत में है यूंही नाम बनाम बहुत से अश्ख़ास को लिखवाया फिर फ़रमाया कि लिख *फुलां फ़िन-नार* यानी फुलां शख़्स दोज़ख़ में है। उन्होंने लिखने से हाथ रोक लिया आपने फिर फ़रमाया उन्होंने न लिखा आपने से सह बारह इरशाद किया उन्होंने लिखने से इंकार कर दिया, उस पर आपने फ़रमाया *अन्ता फ़िन्नार* तू आग में है वह घबराए हुए उनके वालिद माजिद की ख़िदमत में हाज़िर हुए हज़रत ने फ़रमाया *अन्ता फ़िन्नार* कहा *या अन्ता फ़ी जहन्नम* अर्ज़ की *अन्ता फ़िन्नार* फ़रमाया, हज़रत ने इरशाद फ़रमाया मैं उसके कहे को बदल नहीं सकता अब तुझे अख़्तियार है दुनिया की आग पसन्द कर या आख़िरत की अर्ज़ की दुनिया की आग पसन्द है उनका

जल कर इंतिक़ाल हुआ हदीस में आग के जले हुए को भी शहीद फ़रमाया है।

को यह मरतबा इनायत फ़रमाया एक बुज़ुर्ग फरमाते हैं वह मर्द नहीं जो तमाम दुनिया को मिस्ल हथेली के न देखे उन्होंने सच फरमाया अपने मरतबा का इज़्हार किया उनके बाद हज़रत शैख़ बहाउल-मिल्लह बद्दीन नक़्श बन्द कुद्दिसा सिर्रुहू ने फरमाया मैं कहता हूँ मर्द वह नहीं जो तमाम आलम को अंगूठे के नाख़ुन की मिस्ल न देखे और वह जो नसब में हुज़ूर के साहबज़ादे और निस्बत में हुज़ूर के एक आला जाह कफ़श बरदार हैं आनी हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु क़सीद-ए-ग़ौसीया शरीफ़ में इरशाद फ़रमाते हैं।

यानी मैंने अल्लाह के तमाम शहरों को मिस्ल राई के दाने के मुलाहिज़ा किया और यह देखना किसी ख़ास वक़्त से ख़ास न था बल्कि अलल-इत्तिसाल यही हुक्म है और फ़रमाते हैं *अन्ना बूबुव्वते ऐनी फ़िल्लौहिल-महफ़ूज़* मेरी आंख की पुतली लौहे महफ़ूज़ में लगी है लौहे

महफ़ूज़ किया है उसके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है। *कुल्लु सग़ीरुन व कबीरुन मुस्ततेरुन* हर बड़ी छोटी चीज़ लिखी हुई है और फ़रमाता है। *मा फर्रतना फ़िल-किताबि मिन* शैइन हम ने किताब में कोई शय उठा न रखी और फरमाता है। *ला रतबा वला याबिसा इल्ला फ़ी किताबिन मुबीन* कोई तर व ख़ुश्क ऐसा नहीं जो किताबे मुबीन में न हो तो जब लौहे महफ़ूज़ की यह हालत कि इसमें तमाम काइनात रोज़े अव्वल से रोज़े आख़िर तक महफ़ूज़ हैं तो जिसको उसका इल्म हो बेशक उसे सारी काइनात का इल्म होगा।

था बाक़ी सब कुफ़्रियात बराहीने क़ातेआ में हैं। मुअल्लिफ़ गुफ़िर लहू) का भी इल्म नहीं दीवार के पीछे की भी ख़बर नहीं बल्कि हुज़ूर के लिए इल्मे ग़ैब का मानना शिर्क है और शैतान की वुस्अत इल्मे नस से साबित है और अल्लाह के दिए से भी हुज़ूर को इल्मे ग़ैब हासिल नहीं हो सकता। बराबरी तो दरकनार मैंने अपनी किताबों में तस्रीह कर दी है कि अगर तमाम अव्वलीन व आख़िरीन का इल्म जमा किया जाए तो उस इल्म को इल्मे इलाही से वह निस्बत हरगिज़ नहीं हो सकती जो एक क़तरे के करूरवे हिस्सा को करूरो समुन्द्र से है कि यह निस्बत मुतनाही की मुतनाही के साथ है और वह ग़ैर मुतनाही मुतनाही को ग़ैर मुतनाही से क्या निस्बत हो सकती है।

अर्ज़ : सदक़ा का जानवर बिला ज़बह किए किसी मसरिफ़ सदक़ा को दे दिया जाए तो जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : अगर सदक़ा वाजिबा है और वजूबे ख़ास ज़बह का है तो बेज़बह अदा न होगा। मगर इस हालत में कि ज़बह के लिए वक़्ते मुऐयन था जैसे कुरबानी के लिए ज़िल-हिज्जा की दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं और वह वक़्त निकल गया तो अब ज़िन्दा तसद्दुक़ किया जाएगा।

अर्ज़ : अक़ीक़ा का गोश्त बच्चा के मां-बाप, नाना-नानी, दादा-दादी, मामू, चचा वग़ैरह खाएं या नहीं।

इरशाद : सब खा सकते हैं *कुलू औ तसद्दकू व अयतजरू* उकूदुद्दरीया में है *अहकामुहा अहकामिल-अज़्हिया।*

अर्ज़ : किया मुहर्रम व सफर में निकाह करना मना है। OK

इरशाद : निकाह किसी महीने में मना नहीं यह ग़लत मशहूर है।

अर्ज़ : ज़ैद की रबीबा लड़की का निकाह ज़ैद के हक़ीक़ी भाई से हो सकता है।

इरशाद : हाँ जाइज़ है।

अर्ज़ : किया इद्दत के अन्दर भी निकाह हो सकता है।

इरशाद : इद्दत में निकाह तो निकाह। निकाह का पयाम देना भी हराम है।

अर्ज़ : अगर कोई पेशे इमाम या क़ाज़ी इद्दत में निकाह पढ़ाए तो उसके लिए क्या हुक्म है उस पढ़ाने वाले के निकाह में तो कुछ फ़र्क़ न आएगा और ऐसे शख़्स की इमामत का क्या हुक्म है और उस पर कुछ

जो क़बूल कर लेता और मासियत में न उठाता इतनी देर तक की ज़िन्दगी पर तुम लोगों को इत्मीनान होता है वहाँ हर आन मौत पेशे नज़र है और डरते हैं कि इस वक़्त आ जाए और इस ग़ैरे ख़ुदा का ख़तरा क़ल्ब में हो जंगल में फेंक देते तो नफ़्स का का तअल्लुक़ क़तअ् न होता कि अभी दस्ते रस रहती अब बताइए सिवा उसके उनके पास क्या चारा था कि उस से फौरन-फौरन इस तरह हाथ ख़ाली कर लें कि नफ़्स को पास हो जाए और उसके ख़्याल से बाज़ आए यह सिफ़ाए क़ल्ब व दफ़ा ख़तर-ए-ग़ैर की दौलत करोड़ों अशरफ़ियों बल्कि तमाम हफ़्त अक़्लीम की सलतनत से करोड़ों दरजा आला व अफ़ज़ल है क्या अगर सौ अशरफ़ियाँ ख़र्च करके सलतनत यह मिली कोई उसे तज़ैयुअ् माल कह सकता है बल्कि बड़ी दौलत का बहुत अरज़ां हासिल करना, यही यहाँ है।

अर्ज़ : वहदतुल-वजूद के क्या मानी हैं।

इरशाद : वजूदे हस्ती बिज़्ज़ात वाजिब तआला के लिए है इसके सिवा जितनी मौजूदात हैं सब उसी की ज़िल्ल पर तो हैं, तो हक़ीक़तन वजूद एक ही ठहरा।

अर्ज़ : उसका समझना तो कुछ दुशवार नहीं फिर यह मस्अला इस क़द्र क्यों मुश्किल मशहूर है।

इरशादात : इस में ग़ौर व तअम्मुल या मूजिबे हैरत है या बाइसे ज़लालत अगर इसकी थोड़ी भी तफ़्सील करूं तो कुछ समझ में न आएगा बल्कि औहामे कसीरा पैदा हो जाएंगे उसके बाद कुछ मिसालें बयान फरमाई। उनमें से एक याद रही। मसलन रौशनी बिज़्ज़ात आफ़ताब व चिराग़ में है ज़मीन व मकान अपनी ज़ात में बेनूर हैं मगर बिल-अर्ज़ आफताब की वजह से तमाम दुनिया मुनव्वर और चिराग़ से सारा घर रौशन होता है उनकी रौशनी उन्हीं की रौशनी है उनकी रौशनी उन से उठा ली जाए वह अभी तारीक महज रह जाएं।

अज़ : यह क्यों कर होता है कि हर जगह साहिबे मरतबा को अल्लाह ही अल्लाह नज़र आता है।

इरशाद : इसकी मिसाल यूं समझिए कि जो शख़्स आईना ख़ाना में जाए वह हर तरह अपने आप ही को देखेगा इसलिए कि यही असल है और जितनी सूरतें हैं सब उसके ज़िल्ल हैं मगर यह सूरतें उनकी

अर्ज़ : हुज़ूर एक इस्तिग़ासा पेश करना है उसके वास्ते कौन सा दिन मुनासिब है।

इरशाद : उसके लिए कोई ख़ास दिन मुक़र्रर नहीं अल्बत्ता हदीस शरीफ़ में इरशाद है कि जो शख़्स किसी हाजत को हफ़्ता के दिन सुबह के वक़्त क़बल तुलूअ्-ए-आफ़ताब अपने घर से निकले तो उसकी हाजत रवाई का मैं ज़ामिन हूँ।

अर्ज़ : हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर हाजत के लिए इरशाद फरमाया है।

इरशाद : हाँ जाइज़ हाजत होना चाहिए।

अर्ज़ : अलम के पारे में एक जगह अज़ाबे अज़ीम आया है अगर नमाज़ में अलीम पढ़ा हो जाएगी या नहीं।

इरशाद : हाँ हो जाएगी नमाज़ उस ग़लती से जाती है जिस से माना फासिद हो जाएं।

अर्ज़ : नमाज़ में अगर बिस्मिल्लाह शरीफ़ बिल-जेहर निकल जाए तो क्या हुक्म है।

इरशाद : बिला क़स्द निकल जाए तो ख़ैर वरना क़सदन मक्रूह।

अर्ज़ : दो मस्जिदें क़रीब-क़रीब हैं अय्यामे बारिश में एक शहीद हो गई अब उसका सामान दूसरी मस्जिद मे कि वह भी शिकस्ता हालत में है लगा सकते हैं या नहीं।

इरशाद : नाजाइज़ है हत्ता कि एक मस्जिद का लोटा भी दूसरी मस्जिद में ले जाने की मुमानेअत है मुसलमानों पर दोनों का बनाना और आबाद करना फ़र्ज़ है और इस क़द्र क़रीब बनाने की ज़रूरत ही क्या।

अर्ज़ : हुज़ूर मस्जिद के नाम से चन्दा वसूल करके खुद खाए तो क्या हुक्म है।

इरशाद : जहन्नम का मुस्तहिक़ है।

अर्ज़ : अगर कोई शख़्स अपनी ज़िन्दगी में पुख़्ता क़ब्र बनवा कर तैयार करके रखे। यह जाइज़ है या नाजाइज़। OK

इरशाद : अल्लाह तआला फरमाता है। *वमा तदरी नफ़्सुन बेऐये अर्ज़िन तमूतु*। कोई नहीं जानता कि वह कहाँ मरेगा क़ब्र तैयार रखने का शरअन हुक्म नहीं अल्बत्ता कफ़न सिल्वा कर रख सकता है कि जहाँ कहीं जाए अपने साथ ले जाए और क़ब्र हमराह नहीं रह सकती।

ताक़त रफ़्ता-रफ़्ता जल्द अदा कर ले काहिली न करे जब तक फर्ज़ ज़िम्मा पर बाक़ी रहता है कोई नफ़्ल कुबूल नहीं किया जाता। नीयत उन नमाज़ों की इस तरह हो मसलन सौ बार की फज्र क़ज़ा है तो हर बार यूं कहे कि सब से पहले जो फज्र मुझ से क़ज़ा हुई हर दफ़ा यह। कहे यानी जब एक अदा हुई तो बाक़ियों में जो बस से पहली है इसी तरह ज़ुहर वग़ैरह हर नमाज़ में नीयत करे जिस पर बहुत सी नमाज़ें क़ज़ा हों उसके लिए सूरते तख़्फ़ीफ़ और जल्द अदा होने की यह है कि ख़ाली रकअतों में बजाए *अल्हम्दु शरीफ़* के तीन बार *सुब्हानल्लाह* कहे अगर एक बार भी कह लेगा तो फ़र्ज़ अदा हो जाएगा नीज़ तस्बीहात रुकूअ् व सुजूद में सिर्फ़ एक-एक बार *सुब्हाना रब्बियल-अज़ीम* और *सुब्हाना रब्बियल-आला* पढ़ लेना काफी है तशह्हुद के बाद दोनों दरूद शरीफ़ के बजाए *अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यिदना मुहम्मदिन व आलेही* वित्रों में बजाए दुआए कुनूत *रब्बिग़-फिरली* कहना काफी है तुलूअ् आफ़ताब के बीस मिनट बाद और ग़ुरूब आफताब से बीस मिनट क़ब्ल नमाज़ अदा कर सकता है उस से पहले या उसके बाद नाजाइज़ है हर ऐसा शख़्स जिसके ज़िम्मा नमाज़ें बाक़ी हैं छुप कर पढ़े कि गुनाह का ऐलान जाइज़ नहीं (इसी सिलसिला में इरशाद फ़रमाया) अगर किसी शख़्स कि ज़िम्मा तीस या चालीस साल की नमाज़ें वाजिबुल-अदा हैं उसने अपने इन ज़रूरी कामों के अलावा जिनके बेग़ैर गुज़र नहीं कारोबार तर्क करके पढ़ना शुरू किया और पक्का इरादा कर लिया कि कल नमाज़ें अदा करके आराम लूंगा और फर्ज़ कीजिए इसी हालत में एक महीना या एक दिन ही के बाद उसका इंतिक़ाल हो जाए तो अल्लाह तआला अपनी रहमते कामिला से उसकी सब नमाज़ें अदा कर देगा।

तरजमा : जो अपने घर से अल्लाह व रसूल की तरफ़ हिजरत करता हुआ निकले फिर उसे रास्ता में मौत आ जाए तो उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मा करम पर साबित हो चुका यहां मुतलक़ फरमाया घर से अगर एक ही क़दम निकाला और मौत ने आ लिया तो पूरा काम उसके नाम-ए-आमाल में लिखा जाएगा और कामिल सवाब पाएगा वहाँ नीयत देखते हैं सारा दारोमदार हुस्ने नीयत पर है।

अर्ज़ : हुज़ूर जब रुसुल व मलाइका मासूम हैं तो उनको अलैहिस्सलातु वस्सलाम कह कर ईसाले सवाब करने की क्या ज़रूरत है।

हाज़िर हुईं। बच्चा के हाथ में रोटी का टुकड़ा था अर्ज़ की हुज़ूर अब यह रोटी खुद खाता है बच्चा लेकर रज्म फरमाया।

अर्ज़ : क्या हुज़ूर हद्दे शरई से पाक हो जाता है।

इरशाद : हद से पाक हो जाता है और क़सास से नहीं होता ख़ून नाहक़ करने वाले पर तीन हक़ हैं एक मक़्तूल के अइज़्ज़ा का दूसरा मक़्तूल का तीसरा रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला का जिन में से अइज़्ज़ा का हक़ क़िसास लेने से अदा हो जाता है और दो हक़ बाक़ी रहते हैं।

अर्ज़ : उस शख़्स पर जो क़िसास में क़त्ल किया गया नमाज़ पढ़ी जाए।

इरशाद : हाँ जैसे खुद कशी करने वाले की अल्बत्ता अपने मां-बाप को क़त्ल करने वाले और बाग़ी डाकू को डाका में मारा गया उनके जनाज़ा की नमाज़ नहीं।

अर्ज़ : एक साहब ने एक वहाबी के जनाज़ा की नमाज़ पढ़ी ऐसे शख़्स के लिए क्या हुक्म है।

इरशाद : वहाबी राफ़ज़ी क़ादयानी वग़ैरहुम कुफ़्फ़ार मुरतदीन के जनाज़ा की नमाज़ उन्हें ऐसा जानते हुए पढ़ना कुफ़्र है।

अर्ज़ : अगर इमाम मिंबर छोड़ कर खुतबा पढ़े और जब कहा जाए तो कहे कोई हरज नहीं इस सूरत में नमाज़ होगी या नहीं।

इरशाद : ख़िलाफ़े सुन्नत है इमाम को समझाना चाहिए नमाज़ हो गई हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़माने में बरसों के बाद मिंबर शरीफ़ बना इब्तिदा अक्सर सुतून के सहारे से हुज़ूर ने खुतबा फरमाया है।

अर्ज़ : हुज़ूर नमाज़ी के सामने से निकलने के लिए कितना फासिला दरकार है।

इरशाद : ख़ाशेईन की सी नमाज़ पढ़े कि क़्याम में नज़र मौज़ा सुजूद पर जमाई तो नज़र का क़ायदा है जहाँ जमाई जाए उस से कुछ आगे बढ़ती है मेरे तजरबा में यह जगह तीन गज़ है यहां तक निकलना मुतलक़न जाइज़ नहीं उस से बाहर-बाहर सहरा और बड़ी मस्जिद में निकल सकता है मकान और छोटी मस्जिद में दीवार क़िबला तक सामने से नहीं जा सकता फुक़्हाए किराम ने जिसको बड़ी मस्जिद फरमाया है

यहां कोई नहीं सिवाए मस्जिद ख़्वारिज़्म के जिसका एक रुबुअ् चार हज़ार सुतून पर है बड़ी मस्जिद है या मस्जिद हराम शरीफ़ में नमाज़ी के सामने तवाफ़ जाइज़ है कि वह भी मिस्ल नमाज़ इबादत है (इसी सिलसिल-ए-बयान में फरमाया कि) अगर कोई शख़्स तन्हा अपने घर या मस्जिद में पढ़ रहा है और दूसरा शख़्स दस्तक दे या मस्जिद में नमाज़ी के सामने से निकलना चाहता हो तो नमाज़ी उसको आगाह करने की ग़रज़ से बिल-जेहर ला-इलाहा इल्लल्लाह कह दे और अगर नमाज़ में बच्चा सामने आ कर बैठ जाए तो उसको हटा दे और अगर तख़्त पर पढ़ रहा हो और बच्चा के गिर जाने का एहतमाल हो तो उसको गोद में उठा ले खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमा बिन्त ज़ैनब रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा को गोद में लेकर नमाज़ पढ़ी है अगर बच्चे के कपड़े या बदन में नजासत लगी है और वह इस क़ाबिल है कि गोद में खुद रुक सकता है तो नमाज़ जाइज़ है कि बच्चा हामिले नजासत है वरना नमाज़ न होगी कि अब यह खुद हामिले नजासत हुआ।

अर्ज़ : झूठे मुद्दई नुबुव्वत से मुअ्जिज़ा तलब किया जा सकता है।

इरशाद : अगर मुद्दई नुबुव्वत से इस ख़्याल से कि उसका इज्ज़ ज़ाहिर हो मोजिज़ा तलब करे तो हरज नहीं और अगर तहक़ीक़ के लिए मोजिज़ा तलब किया कि यह मोजिज़ा भी दिखा सकता है या नहीं तो फौर काफिर हो गया (इसी तज़्किरा में फ़रमाया कि) मुबाहिसा में लोग यह शर्त कर लेते हैं कि जो साकित हो जाएगा वह दूसरे का मज़्हब अख़्तियार कर लेगा यह सख़्त हराम और अशद हिमाक़त है हम अगर किसी से लाजवाब भी हो जाएं तो मज़्हब पर कोई इल्ज़ाम नहीं कि हमारे मुक़द्दस मज़्हब का मदार हम पर नहीं हम इंसान हैं उस वक़्त जवाब ख़्याल में न आया।

मुअल्लिफ़ : उस वक़्त मौलाना मौलवी नईमुद्दीन साहब और मौलाना मौलवी ज़फ़रुद्दीन साहब और मौलवी अहमद मुख़्तार साहब मेरठी और मौलवी अहमद अली साहब व मौलाना मोलवी रहम इलाही साहब नाज़िमे अंजुमन अह्ले सुन्नत व मुदर्रिस मदरसा अह्ले सुन्नत व मौलाना मौलवी अमजद अली साहब मुदर्रिस मदरसा अह्ले सुन्नत व मुहतमिम मतबअ् अह्ले सुन्नत वग़ैरह हज़रात उलमाए किराम हाज़िरे ख़िदमत थे।

और आराम तकिए और फूल और खुशबुएं लेकर क़ब्र पर आती है और फरमाती है मुझे आने में देर हुई, तू घबराया तो न था फिर बिछौने बिछाती और तकिया लगाती है फ़रिश्ते बहुक्मे रब्बुल-आलमीन वापस जाते हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर एक शख़्स ने अपनी लड़की के इंतिक़ाल के बाद देखा कि वह अलील और बरहना है यह ख़्वाब चन्द बार देख चुका है।

इरशाद : कलिम-ए-तैयबा सत्तर हज़ार मरतबा मआ़ दरूद शरीफ़ पढ़ कर बख़्श दिया जाए इन्शाअल्लाह तआला पढ़ने वाले और जिसको बख़्शा है दोनों के लिए ज़रिय-ए-नजात होगा और पढ़ने वाले को दूना सवाब होगा और अगर दो को बख़्शेगा तो तिगुना इसी तरह करोड़ों बल्कि जमीअ् मुमिनीन मुमिनात को ईसाले सवाब कर सकता है इसी निस्बत से उस पढ़ने वाले को सवाब होगा हज़रत शैख़ अकबर मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाह तआला अलैहि एक जगह दावत में तशरीफ़ ले गये आपने देखा कि एक लड़का खाना खा रहा है खाना खाते हुए दफ़्अ़तन रोने लगा वजह दरयाफ़्त करने पर कहा कि मेरी मां को जहन्नम का हुक्म है और फ़रिश्ते उसे ले जाते हैं (उस शहर में यह लड़का कश्फ़ में मशहूर था) हज़रत शैख़ अक्बर मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी रहमतुल्लाह तआला अलैहि के पास यही कलिमा सत्तर हज़ार मरतबा पढ़ा हुआ महफ़ूज़ था आपने उसकी मां को दिल में ईसाले सवाब कर दिया फौरन वह लड़का हंसा आपने सबब हंसने का दरयाफ़्त फरमाया लड़के ने जवाब दिया कि हुज़ूर मैंने अभी देखा मेरी मां को फ़रिश्ते जन्नत की तरफ़ ले जा रहे हैं शैख़ इरशाद फरमाते हैं इस हदीस की तस्हीह मुझे उस लड़के के कश्फ़ से हुई और उसके कश्फ़ की तस्दीक़ इस हदीस से।

अर्ज़ : अज़ाब फ़क़त रूह पर होता है या जिस्म पर भी।

इरशाद : रूह व जिस्म दोनों पर यू हैं सवाब भी हदीस में है एक लुंझा किसी बाग़ के सामने पड़ा था और मेवे देख रहा था मगर उस तक जा न सकता था इत्तिफ़ाक़न एक अन्धे का उस तरफ़ से गुज़र हुआ कि बाग़ में जा सकता था मगर मेवे उसे नज़र न आते लुंझे ने अन्धे से कहा तो मुझे बाग़ में ले चल वहाँ जा कर हम और तुम दोनों मेवे खाएं अन्धा उसको अपनी गर्दन पर सवार करके बाग़ में ले गया लुंझे ने मेवे

मुझ में और तुम में हिजाब हो जाएगी एक बीबी ने मरने के बाद ख़्वाब में अपने लड़के से फरमाया मेरा कफन ऐसा ख़राब है कि मुझे अपने साथियों में जाते शर्म आती है परसों फलां शख़्स आने वाला है उसके

कफन में अच्छे कपड़े का कफ़न रख देना सुबह को साहबज़ादा ने उठ कर उस शख़्स को दरयाफ़्त किया मालूम हुआ कि वह बिल्कुल तन्दुरुस्त है और कोई मरज़ नहीं तीसरे रोज़ ख़बर मिली उसका इंतिक़ाल हो गया है लड़के ने फौरन निहायत उम्दा कफन सिलवा कर उस के कफ़न में रख दिया और कहा यह मेरी मां को पहुंचा देना रात को वह सालेहा ख़्वाब में तशरीफ़ लाईं और बेटे से कहा खुदा तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे तुमने बहुत अच्छा कफन भेजा। उहबान बिन सैफी रज़ि

वसीअ् मैदान है और उसमें एक बड़ा पुख़्ता कुवाँ है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फरमा हैं और चन्द सहाबा किराम भी हाज़िर हैं जिनमें से मैंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को पहचाना इस कुएँ में से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और सहाबा किराम पानी भर रहे हैं इसमें से एक बड़ा तख़्ता निकला कि अर्ज़ मैं डेढ़ गज़ और तूल में दो गज़ होगा और उस पर सब्ज़ कपड़ा चढ़ा हुआ था जिसके वस्त में सफेद रौशन बहुत जली क़लम से अ ह ज इसी शक्ल में लिखे हुए थे। जिस से मैंने यह मतलब निकाला कि उसका हासिल करना हज़यान फरमाया जाता है इससे बाक़ायदा जफर इज़्न निकल सकता था ह को बतौर मुअख़्ख़र में रखा उसके अदद पाँच हैं अब वह अपनी पहली जगह से तरक़्क़ी करके दूसरे मरतबा में आ गई और पाँच का दूसरा मरतबा पाँच दहाई है यानी पचास जिसका हर्फ़ नून है यूं इज़्न समझाता मगर मैंने उस तरफ़ इल्तिफ़ात न किया और लफ़्ज़ को ज़ाहिर रख कर उस फन को छोड़ दिया कि अहज़ के मानी हैं फुज़ूल बक। OK

अर्ज़ : मुरीद को बाद वफ़ात शैख़, क़ब्र पर किस तरह अदब करना चाहिए।

इरशाद : चार हाथ के फासिला से खड़ा हो कर फातिहा पढ़े और उसके हयात में जैसा अदब करता था सामने से हाज़िर हो कि बालीं से हाज़िर होने में मुड़ कर देखना पड़ता है और उसमें तक्लीफ़ होती है (इसी सिलसिल-ए-बयान में यह हिकायत बयान फरमाई) एक बुज़ुर्ग का इंतिक़ाल हुआ उनकी साहबज़ादी रोज़ाना क़ब्र पर हाज़िर होतीं और तिलावते क़ुरआने अज़ीम किया करतीं कुछ मुद्दत गुज़रने के बाद वह जोश जाता रहा एक रोज़ हाज़िर हुई और तिलावते कुरआने अज़ीम किया करतीं कुछ मुद्दत गुज़रने के बाद वह जोश जाता रहा एक रोज़ हाज़िर न हुईं शब को ख़्वाब में तशरीफ़ लाए फरमाया ऐसा न करो आओ और मेरे मवाजा में खड़ी हो यहां तक कि तुम्हें जी भर के देख लूं फिर मेरे लिए दुआए रहमत करो और फिर चली जाओ रहमत आकर मुझ में और तुम में हिजाब हो जाएगी एक बीबी ने मरने के बाद ख़्वाब में अपने लड़के से फरमाया मेरा कफन ऐसा ख़राब है कि मुझे अपने साथियों में जाते शर्म आती है परसों फलां शख़्स आने वाला है उसके

अर्ज़ : हुज़ूर यह वाक़या किस किताब में है कि हज़रत सैयदुत्ताइफ़ा जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अलैहि ने या अल्लाह फरमाया और दरिया से उतर गये पूरा वाक़या याद नहीं।

इरशाद : ग़ालिबन हदीक़-ए-नदिया में है कि एक मरतबा हज़रत सैयदी जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि दजला पर तशरीफ़ लाए और या अल्लाह कहते हुए उस पर ज़मीन की मिस्ल चलने लगे बाद को एक शख़्स आया उसे भी पार जाने की ज़रूरत थी कोई कश्ती उस वक़्त मौजूद न थी जब उसने हज़रत को जाते देखा अर्ज़ की मैं किस तरह आऊं फरमाया। या जुनैद या जुनैद कहता चला आ उस ने यही कहा और दरिया पर ज़मीन की तरह चलने लगा जब बीच दरिया में पहुंचा शैताने लईन ने दिल में वसवसा डाला कि हज़रत खुद तो या अल्लाह कहें और मुझ से या जुनैद कहलवाते हैं मैं भी या अल्लाह क्यों न कहूं उसने या अल्लाह कहा और साथ ही ग़ोता खाया पुकारा हज़रत मैं चला फरमाया वही कह या जुनैद या जुनैद जब कहा दरिया से पार हुआ अर्ज़ की हज़रत यह क्या बात थी आप अल्लाह कहें तो पार हों और मैं कहूं तो ग़ोता खाऊं फरमाया अरे नादान अभी तू जुनैद तक तो पहुंचा नहीं अल्लाह तक रसाई की हवस है। अल्लाहु अक्बर दो साहिबे औलियाए किराम से एक दरिया के उस किनारे और दूसरे उस पार

रहते थे उन में से एक साहब ने अपने यहाँ खीर पकवाई और ख़ादिम से कहा थोड़ी हमारे दोस्त को भी दे आओ ख़ादिम ने अर्ज़ की हुज़ूर रास्ते में तो दरिया पड़ता है क्योंकर पार उतरूंगा कश्ती वग़ैरह का कोई सामान नहीं फ़रमाया दरिया के किनारे जा और कह कि मैं उसके पास से आया हूं जो आज तक अपनी औरत के पास नहीं गया ख़ादिम हैरान था कि यह क्या मुअम्मा है इस वास्ते कि हज़रत साहिबे औलाद थे बहरहाल तामीले हुक्म ज़रूर थी दरिया पर गया और वह पैग़ाम जो इरशाद फरमाया था कहा दरिया ने फौरन रास्ता दे दिया उसने पार पहुंच कर उन बुज़ुर्ग की ख़िदमत में खीर पेश की उन्होंने नोश जान फरमाई और फ़रमाया हमारा सलाम अपने आक़ा से कह देना ख़ादिम ने अर्ज़ की सलाम तो जभी कहूंगा जब दरिया से पार उतर जाऊं फरमाया दरिया पर जा कर कह मैं उसके पास से आता हूं जिसने तीस बरस से आज तक कुछ नहीं खाया ख़ादिम शश व पंज में था यह अजीब बात है अभी तो मेरे सामने खीर तनावल फरमाई और फरमाते हैं इतनी मुद्दत से कुछ नहीं खाया मगर बलिहाज़ अदब ख़ामोश दरिया पर आकर जैसा फरमाया था कह दिया दरिया ने फिर रास्ता दे दिया जब अपने आक़ा की ख़िदमत में पहुंचा तो उस से न रहा गया और अर्ज़ की हुज़ूर यह क्या मुआमला था फरमाया हमारा कोई फ़ेअ़ल अपने नफ़्स के लिए नहीं होता।

हैं ईमान का तक़ाज़ा यह है आगे तुम जानो और तुम्हारा काम नेचरी तहज़ीब के मुद्दईयों को हम ने देखा है कि ज़रा कोई कलिमा उनकी शान के ख़िलाफ़ कहा उनका थूक उड़ने लगता है आंखें लाल हो जाती हैं गर्दन की रगें फूल जाती हैं उस वक़्त वह मजनून तहज़ीब बिखरी फिरती है वजह क्या है कि अल्लाह व रसूल व मुअज़्ज़माने दीन से अपनी उक़अत दिल में ज़्यादा है ऐसी नापाक तहज़ीब उन्हीं को मुबारक फरज़न्दाने इस्लाम उस पर लानत भेजते हैं खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मस्जिदे नबवी से बद मज़हबों को नाम ले कर उठा दिया एक मरतबा फारूके आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़े जुमा में देर हो गई रास्ते में देखा कि चन्द लोग मस्जिद से लौटे हुए आ रहे हैं आप इस निदामत की वजह से कि अभी मैंने नमाज़ नहीं पढ़ी है छुप गये और उस ज़िल्लत की वजह से जो मस्जिद शरीफ़ से निकाल देने में हुई थी। अलग छुप कर निकल गये रब्बुल-इज़्ज़त तबारक व तआला इरशाद फरमाता है।

या ऐयुहन्नबीयु जाहिदिल-कुफ़्फ़ारा वल-मुनाफ़िक़ीना वग़लुज़ अलैहिम।

ऐ नबी जिहाद फरमा और सख़्ती फरमा काफिरों और मुनाफ़िक़ों पर और फरमाता है।

तरजमा : मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) और जो उनके साथी हैं कुफ़्फ़ार पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल और फरमाता है। जल्ला व उला *वल-यजेदू फ़ीकुम ग़िल्ज़तन।* लाज़िम कि कुफ़्फ़ार तुम में सख़्ती पाएं तो साबित हुआ कि काफिरों पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम सख़्ती फरमाते थे।

अर्ज़ : अगर किसी शख़्स का सतर खुल जाए तो जिस ने देखा या जिसका सतर खुला वुज़ू रहेगा या नहीं।

इरशाद : वुज़ू किसी चीज़ के देखने या छूने से नहीं जाता (फिर फरमाया) तीस अज़्व औरत के औरत हैं और नौ मर्द के उन में से किसी अज़्व का चहारुम बक़द्र रुक्न यानी तीन बार सुबहानल्लाह कहने तक बिला क़स्द खुला रहना मुफ़्सिद नमाज़ है और बिल-क़स्द तो अगर एक आन के लिए खोले जब भी नमाज़ जाती रहेगी।

अर्ज़ : हुज़ूर वहदतुल-वजूद किसे कहते हैं।

इरशाद : वजूद एक और मौजूद एक है बाक़ी सब के ज़िल्ल हैं।

अर्ज़ : इस्माईल देहलवी को कैसा समझना चाहिए।

इरशाद : मेरा मस्लक यह है कि वह यज़ीद की तरह है अगर कोई काफिर कहे हम मना न करेंगे और खुद कहेंगे (1) नहीं अल्बत्ता गुलाम अहमद सैयद अहमद ख़लील अहमद रशीद अहमद अशरफ़ अली के कुफ़्र में जो शक करे वह खुद काफिर *मन शक्का फ़ी कुफ़्रेही व अज़ाबेही फ़क़द कफरा*।

OK

(1) यहाँ वहाबिया सख़्त धोखा देते हैं कि जब तन्क़ीस व तौहीन शाने रिसालत कुफ़्र है तो इस्माईल ने भी की है वजह क्या है कि अशरफ़ अली वग़ैरह तो ऐसे काफिर हों कि उनके कुफ़्र में शक करने वाला भी काफिर हो और इस्माईल ऐसा न हो मगर मुसलमान होशियार हों यहाँ खुबसा का सख़्त धोखा है असल यह है कि इस्माईल और हाल के वहाबिया के अक़्वाल में फ़र्क़ है हम अह्ले सुन्नत मुतकल्लेमीन का मज़हब यह है कि जब तक किसी क़ौल में तावील की गुंजाइश होगी तक्फ़ीर से ज़बान रोकी जाएगी कि मुम्किन है कि उसने इस क़ौल से यही मानी मुराद लिए हों शरह फ़िक़्ह अकबर में फरमाया हाँ जब क़ौल ऐसा हो कि उस में असलन तावील की गुंजाइश न हो तो तक्फ़ीर से ज़बान रोकी जाएगी तो इस क़ौल के क़ाइल को जिस में तावील की गुंजाइश है अगर कोई काफिर कहे तो हम मना नहीं करते कि वह मानी ज़ाहिर के एतबार से ठीक कह रहा है और उसकी खुद तक्फ़ीर नहीं करते कि एहतियात इस में है और इस दूसरी सूरत के क़ाइल की तक्फ़ीर ज़रूर है कि इसमें जब असलन तावील नहीं तो तक्फ़ीर से ज़बान रोकने का हासिल खुद कुफ़्र और तुग़यान है उनके इस बेहूदा एतराज़ और ज़लील धोखे का जवाब इतना काफी है कि एक क़ौल पर फुक़्हा तक्फ़ीर फरमाते और मुतकल्लेमीन नहीं करते। अब कहें क्या कहते हैं क्या फुक़्हा के नज़्दीक मुतकल्लेमीन उसकी तक्फ़ीर न करके जिसकी तक्फ़ीर फुक़्हा ने की है मआज़ल्लाह फुक़्हा के नज़्दीक काफिर ठहरेंगे या मुतकल्लेमीन फुक़्हा को काफिर कहेंगे इसलिए कि उन्होंने मुतकल्लेमीन के नज़्दीक जो काफिर न था उसकी तक्फ़ीर की *वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहुल-अलीयुल-अज़ीम*। इन खुबुसा के अक़्वाल बदतर अज़ अबवाल ऐसे हैं जिन में नाम को भी तावील की गुंजाइश नहीं लिहाज़ उनके लिए यह हुक्म है कि जो उनके कुफ़्र में शक

अर्ज़ : हुज़ूर औलिया एक वक़्त में चन्द जगह हाजिर होने की कुव्वत रखते हैं।

इरशाद : अगर वह चाहें तो एक वक़्त में दस हज़ार शहरों में दस हज़ार जगह की दावत कुबूल कर सकते हैं।

अर्ज़े मुअल्लिफ़ : हुज़ूर उस से यह ख़्याल होता है कि आलमे मिसाल से अज्सामे मिसालिया औलिया के ताबे हो जाते हैं इसलिए एक वक़्त में मुतअद्दद जगह एक ही साहब नज़र आते हैं अगर यह है तो उस पर शुबह होता है कि मिस्ल तो शय का ग़ैर होता है इम्साल का वजूद

शय का वजूद नहीं तो उन अज्साम का वजूद उस जिस्म का वजूद न ठहरेगा।

इरशाद : इम्साल अगर होंगे तो जिस्म के उनकी रूह पाक उन तमाम अज्साम से मुतअल्लिक़ हो कर तसर्रुफ़ फरमाएगी तो अज़रूए रूह व हक़ीक़त वही एक ज़ात हर जगह मौजूद है यह भी फहत ज़ाहिर में वरना सबअ़ सनाबिल शरीफ़ में हज़रत सैयदी फतह मुहम्मद कुद्दिसा सिरुहू अश्शरीफ़ का वक़्ते वाहिद में दस मज्लिसों में तशरीफ़ ले जाना तहरीर फरमाया और यह कि उस पर किसी ने अर्ज़ की हज़रत ने वक़्ते वाहिद में दस जगह तशरीफ़ ले जाने का वादा फरमा लिया है यह क्योंकर हो सकेगा। शैख़ ने फरमाया कृष्ण कन्हैया काफिर था और एक वक़्त में कई सौ जगह मौजूद हो गया फतह मुहम्मद अगर चन्द जगह एक वक़्त में हो क्या तअज्जुब है यह ज़िक्र करके फरमाया क्या यह गुमान करते हो

शय का वजूद नहीं तो उन अज्साम का वजूद उस जिस्म का वजूद न ठहरेगा।

इरशाद : इम्साल अगर होंगे तो जिस्म के उनकी रूह पाक उन तमाम अज्साम से मुतअल्लिक़ हो कर तसर्रुफ़ फरमाएगी तो अज़रूए रूह व हक़ीक़त वही एक ज़ात हर जगह मौजूद है यह भी फहत ज़ाहिर में वरना सबअ़ सनाबिल शरीफ़ में हज़रत सैयदी फतह मुहम्मद कुद्दिसा सिरुहू अश्शरीफ़ का वक़्ते वाहिद में दस मज्लिसों में तशरीफ़ ले जाना तहरीर फरमाया और यह कि उस पर किसी ने अर्ज़ की हज़रत ने वक़्ते वाहिद में दस जगह तशरीफ़ ले जाने का वादा फरमा लिया है यह क्योंकर हो सकेगा। शेख़ ने फरमाया कृष्ण कन्हैया काफिर था और एक वक़्त में कई सौ जगह मौजूद हो गया फतह मुहम्मद अगर चन्द जगह एक वक़्त में हो क्या तअज्जुब है यह ज़िक्र करके फरमाया क्या यह गुमान करते हो कि शैख़ एक जगह मौजूद थे बाक़ी जगह मिसालें हाशा बल्कि शैख़ बज़ाते खुद हर जगह मौजूद थे असरारे बातिन फ़हम ज़ाहिर से वरा हैं खोज़ व फ़िक्र बेजा है।

अर्ज़ : हुज़ूर हिन्दुस्तान में इस्लाम हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के वक़्त से फैला।

इरशाद : हज़रत से कई सौ बरस पहले इस्लाम आ गया था मशहूर है कि सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के सत्तरह (17) हमले हिन्दुस्तान पर हुए।

अर्ज़ : इस शेअ्र का क्या मतलब है -

अह्ले नज़र ने ग़ौर से देखा तो यह खुला
काबा झुका हुआ था मदीने के सामने

इरशाद : शबे मीलाद काबा ने सज्दा किया और झुका मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ और कहा हम्द है उसके वज्हे करीम को जिस ने मुझे बुतों से पाक किया।

अर्ज़ : ग़ौस हर ज़माना में होता है।

इरशाद : बेग़ैर ग़ौस के ज़मीन व आसमान क़ायम नहीं रह सकते।

अर्ज़ : ग़ौस को मुराक़बे से हालात मुन्कशिफ़ होते हैं।

इरशाद : नहीं बल्कि उन्हें हर हाल यूंही मिस्ल आइना पेशे नज़र है। (उसके बाद इरशाद फरमाया) हर ग़ौस के दो वज़ीर होते हैं ग़ौस

शय का वजूद नहीं तो उन अज्साम का वजूद उस जिस्म का वजूद न ठहरेगा।

इरशाद : इम्साल अगर होंगे तो जिस्म के उनकी रूह पाक उन तमाम अज्साम से मुतअल्लिक़ हो कर तसर्रुफ़ फरमाएगी तो अज़रूए रूह व हक़ीक़त वही एक ज़ात हर जगह मौजूद है यह भी फहत ज़ाहिर में वरना सबअ़ सनाबिल शरीफ़ में हज़रत सैयदी फतह मुहम्मद कुद्दिसा सिरुहू अश्शरीफ़ का वक़्ते वाहिद में दस मज्लिसों में तशरीफ़ ले जाना तहरीर फरमाया और यह कि उस पर किसी ने अर्ज़ की हज़रत ने वक़्ते वाहिद में दस जगह तशरीफ़ ले जाने का वादा फरमा लिया है यह क्योंकर हो सकेगा। शैख़ ने फरमाया कृष्ण कन्हैया काफिर था और एक वक़्त में कई सौ जगह मौजूद हो गया फतह मुहम्मद अगर चन्द जगह एक वक़्त में हो क्या तअज्जुब है यह ज़िक्र करके फरमाया क्या यह गुमान करते हो कि शैख़ एक जगह मौजूद थे बाक़ी जगह मिसालें हाशा बल्कि शैख़ बज़ाते खुद हर जगह मौजूद थे असरारे बातिन फ़हम ज़ाहिर से वरा हैं खोज़ व फ़िक्र बेजा है।

OK

अर्ज़ : हुज़ूर हिन्दुस्तान में इस्लाम हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के वक़्त से फैला।

इरशाद : हज़रत से कई सौ बरस पहले इस्लाम आ गया था मशहूर है कि सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के सत्तरह (17) हमले हिन्दुस्तान पर हुए।

अर्ज़ : इस शेअ्र का क्या मतलब है -

अह्ले नज़र ने ग़ौर से देखा तो यह खुला
काबा झुका हुआ था मदीने के सामने

इरशाद : शबे मीलाद काबा ने सज्दा किया और झुका मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ और कहा हम्द है उसके वज्हे करीम को जिस ने मुझे बुतों से पाक किया।

अर्ज़ : ग़ौस हर ज़माना में होता है।

इरशाद : बेग़ैर ग़ौस के ज़मीन व आसमान क़ायम नहीं रह सकते।

अर्ज़ : ग़ौस को मुराक़बे से हालात मुन्कशिफ़ होते हैं।

इरशाद : नहीं बल्कि उन्हें हर हाल यूंही मिस्ल आइना पेशे नज़र है। (उसके बाद इरशाद फरमाया) हर ग़ौस के दो वज़ीर होते हैं ग़ौस

बाद एक आराबी ने मेरी तरफ़ मुतवज्जोह हो कर कहा *रऐतु* तुमने देखा मैंने कहा *रऐतु* हां देखा कहा : *ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल-अलीयिल- अज़ीम।* और तशरीफ़ ले गये उन दोनों अकाबिर उलमा ने हमारी मज्लिसे ख़लवत में उसकी मुबारकबाद दी कि उस रद्दे मुंकर पर कोई मोतरिज़ न हुआ और साथ ही फरमाया कि ऐसे उमूर में कि जानिबे हुकूमत से हैं सुकूत शायां है।

इसी वाक़या मुफ़्ती हन्फ़ीया के वक़्त मैंने जनाब सैयद मुस्तफ़ा ख़लील बिरादर हज़रत मौलाना सैयद इस्माईल से कहा : *हल इन्दकुम शैयुन मिन हज़्मुहू जिब्रील।* आपके पास सैयदना जिब्रील अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ठोकर का कुछ बक़िया है सैयद ज़ादे ने फरमाया नेअम और कटोरे में ज़मज़म शरीफ़ लाए मैं उसे ज़ुअफ के सबब बैठा ही हुआ पी रहा था आंखें नीची थीं जब नज़र उठाई देखा तो वह सैयद जलील मुअद्दब हाथ बांधे खड़े हैं यहां तक कि कटोरा मैंने उन्हें दिया यह हाल उन मुअज़्ज़म व मुअज़्ज़ज़ बन्दगाने ख़ुदा के अदब व इजलाल का था बईं हमा शिद्दते मरज़ व शौक़ मदीना तैयबा में जब वह जुमला मैंने कहा कि रौज़-ए-अनवर पर एक निगाह पड़ जाए फिर दम निकल जाए दोनों उलमाए किराम का गुस्सा से रंग मुतग़ैयर हो गया और हज़रत मौलाना शैख़ सालेह कमाल ने फरमाया हरगिज़ नहीं बल्कि *तऊदु सुम्मा तऊदु सुम्मा तऊदु सुम्मा यकूनु* तो रौज़-ए-अनवर पर अब हाज़िर हो फिर हाज़िर हो फिर हाज़िर हो फिर हाज़िर हो फिर मदीना तैयबा में वफ़ात नसीब हो मौला तआला उनकी दुआ कुबूल फरमाए उनकी इस ग़ायते मुहब्बत के गुस्सा ने मुझे वह हालत याद दिलाई जो इस हज से तेरह चौदह बरस पहले मैंने ख़्वाब में अपने हज़रत वालिद माजिद कुद्दिसल्लाहु सिर्रुहुल-अज़ीज़ से देखी थी मैं उस ज़माना में बशिद्दते दर्द कमर और सीना में मुबतला था उसे बहुत इम्तिदाद व इश्तिदाद हुआ था एक रोज़ देखा कि मेरे पीर भाई और हज़रत के शागिर्द बरकात अहमद साहब मरहूम कि मेरे पीर भाई और हज़रत पीर मुर्शिदे बरहक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के फिदाई थे कम ऐसा हुआ होगा कि हज़रत पीर मुर्शिद का नामे पाक लेते और उनके आंसू रवां न होते जब उनका इंतिक़ाल हुआ और मैं दफन के वक़्त उनकी क़ब्र में उतरा मुझे बिला मुबालग़ा वह खुशबू महसूस हुई जो पहली बार रौज़-ए-अनवर के क़रीब पाई थी

उनके इंतिक़ाल के दिन मोलवी सैयद अमीर अहमद साहब मरहूम ख़्वाब में ज़्यारते अक़्दस हुज़ूर सैयद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशर्रफ़ हुए कि घोड़े पर तशरीफ़ लिए जाते हैं अर्ज़ की या रसूलुल्लाह हुज़ूर कहां तशरीफ़ लिए जाते हैं फरमाया बरकात अहमद के जनाज़े की नमाज़ पढ़ने अल्हम्दुलिल्लाह यह जनाज़ा मुबारका मैंने पढ़ाया और यह वही बरकात अहमद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम थीं कि मुहब्बत पीर व मुर्शिद के सबब उन्हें हासिल हुईं।

अर्ज़ : हुज़ूर तलब और बैअ़त में क्या फ़र्क़ है।

इरशाद : तालिब होने में सिर्फ़ तलब फैज़ है और बैअ़त के माना पूरे तौर से बकना बैअ़त उसी शख़्स से करना चाहिए जिस में यह चार बातें

हों वरना बैअत जाइज़ न होगी अव्वलन : सुन्नी सहीहुल-अक़ीदा हो। सानियन : कम अज़ कम इतना इल्म ज़रूरी है कि बिला किसी की इम्दाद के अपनी ज़रूरत के मसाइल किताब से खुद निकाल सके। सालिसन : उसका सिलसिला हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक मुत्तसिल हो कहीं मुन्क़ता न हो। राबिअन : फासिक़ मुअ्लिन न हो। (इसी सिलसिला में इरशाद हुआ कि) लोग बैअ़त बतौर रस्म होते हैं बैअत के मानी नहीं जानते बैअत उसे कहते हैं कि हज़रत यहिया मुनीरी के एक मुरीद दरिया में डूब रहे थे हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम ज़ाहिर हुए और फरमाया अपना हाथ मुझे दे कि तुझे निकाल लूं उन मुरीद ने अर्ज़ की यह हाथ हज़रत यहिया मुनीरी के हाथ में दे चुका हूं अब दूसरे को न दूंगा हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम ग़ायब हो गये और हज़रत यहिया मुनीरी ज़ाहिर हुए और उनको निकाल लिया।

तसद्दुक़ कर दूं। उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा अर्ज़ करती हैं। *या रसूलुल्लाह तुबतु इलल्लाहि व रसूलेही*। या रसूलुल्लाह मैं अल्लाह व रसूल की तरफ़ तौबा करती हूं इस क़िस्म की बहुत आयात व अहादीस मेरी किताब *अल-अमनु वल-उला* में मिलेंगी जिन से साबित होगा कि हबीब का मुआमला ग़ैरे खुदा का मुआमला नहीं अल्लाह ही का मुआमला है मगर वहाबिया को अक़्ल व ईमान नहीं बिलाल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की हदीस मज़्कूर से पंज आयत का भी जवाज़ साबित हुआ कि वह मुतफ़र्रिक़ मक़ाम से आयात पढ़ते थे और इरशाद हुआ तुम सब ठीक पर हो और आगे जो उन्हें तालीम फरमाई उस से इतना साबित हुआ कि नमाज़ में औला यूं है।

अर्ज़ : हुज़ूर फना फ़िश्शैख़ का मरतबा किस तरह हासिल होता है।

इरशाद : यह ख़्याल रखे कि मेरा शैख़ मेरे सामने है और अपने क़ल्ब को उसके क़ल्ब के नीचे तसव्वुर करके इस तरह समझे कि सरकारे रिसालत से फ़ुयूज़ व अनवारे क़ल्बे शैख़ पर फाइज़ होते और उस से छलक कर मेरे दिल में आ रहे हैं फिर कुछ अरसा के बाद यह हालत हो जाएगी कि शजर व हजर व दरो दीवार पर शैख़ की सूरत साफ़ नज़र आएगी यहां तक कि नमाज़ में भी जुदा न होगी और फिर हर हाल अपने साथ में पाओगे हाफ़िज़ुल-हदीस *सैयदी अहमद सजिलमासी* कहीं तशरीफ़ लिए जाते थे राह में इत्तिफ़ाक़न आपकी नज़र एक निहायत हसीना औरत पर पड़ गई यह नज़र अव्वल थी बिला क़स्द थी दोबारा फिर आपकी नज़र उठ गई अब देखा कि पहलू में हज़रत सैयदी ग़ौसुल-वक़्त अब्दुल-अज़ीज़ दबाग़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु आपके पीर व मुर्शिद तशरीफ़ फरमा हैं और फरमाते हैं अहमद आलिम हो कर उन्हें सैयदी अहमद सजिलमासी के दो बीवियां थीं सैयदी अब्दुल-अज़ीज़ दबाग़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि रात को तुमने एक बीवी के जागते हुए दूसरे से हम बिस्तरी की यह नहीं चाहिए अर्ज़ किया हुज़ूर वह उस वक़्त सोती थी फरमाया सोती न थी सोते में जान डाल ली थी अर्ज़ किया हुज़ूर को किस तरह इल्म हुआ फरमाया जहां वह सो रही थी कोई और पलंग भी था अर्ज़ किया हां एक पलंग ख़ाली था फरमाया उस पर मैं था तो किसी वक़्त शैख़ मुरीद से जुदा नहीं हर आन साथ है।

अर्ज़ : हज़रत इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुज्तहिद हैं।

इरशाद : हां मगर शैख़ अकबर मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी फरमाते हैं कि उन्हें इज्तिहाद की इजाज़त न होगी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से तल्क़ी जुमला अहकाम करेंगे और उन पर अमल फरमाएंगे।

अर्ज़ : नमाज़ किस तरीक़ा पर पढ़ेंगे।

इरशाद : तरीक़ा हन्फ़ीया के मुताबिक़ न यूं कि मुक़ल्लिद हन्फ़ी होंगे बल्कि यूं कि सैयद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इसी तरह फरमाएंगे उस दिन खुल जाएगा कि अल्लाह व रसूल को सब से ज़्यादा पसन्द, मज़्हबे हन्फ़ी है अगर वह मुज्तहिद हैं तो जुमला मसाइल में उनका इज्तिहाद वरना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इरशाद मुताबिक़ मज़्हबे इमाम आज़म होगा इसी ख़्याल से बाज़ अकाबिर के क़लम से निकला कि वह हन्फ़ियुल-मज़हब होंगे बल्कि यहीं लफ़्ज़ मआज़ल्लाह सैयदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम की निस्बत सादिर हो गया हाशा कि नबी अल्लाह किसी इमाम की तक़्लीद फ़रमाए बल्कि वही है कि उनके अमल मुताबिक़ अमले मज़हब हन्फ़ी होंगे उस से मज़्हबे हन्फ़ी की सब से कामिल तर तस्वीब साबित होगी ग़रज़ उनके ज़माने में तमाम मज़ाहिब मुन्क़तआ हो जाएंगे और सिर्फ़ मसाइले मज़्हबे हन्फ़ी बाक़ी रहेंगे व लिहाज़ा अकाबिर अइम्मा कश्फ़ ने फरमाया है कि चशमा शरीअ़ते कुबरा से बहुत नहरें निकलीं और थोड़ी-थोड़ी दूर जा कर खुश्क हो गईं मगर मज़ाहिबे अरबा की चारों नहरें जोश व आब व ताब के साथ बहुत दूर तक बहीं आख़िर में जा कर वह तीन नहरें भी थम गईं और सिर्फ़ मज्हबे हन्फ़ी की नहर अख़ीर तक जारी रही यह कश्फ़े अकाबिर अइम्मा शाफ़ईया का बयान है। रहमतुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन।

अर्ज़ : बैअत के क्या माना हैं ?

इरशाद : बैअत के माना बिक जाना सबअ़ सनाबिल शरीफ़ में है एक साहब को सज़ाए मौत का हुक्म बादशाह ने दिया। जल्लाद ने तल्वार खींची यह अपने शैख़ के मज़ार की तरफ़ रुख़ करके खड़े हो गये जल्लाद ने कहा उस वक़्त क़िब्ला को मुँह करते हैं फरमाया तू अपना काम कर मैंने क़िब्ला को मुंह कर लिया है और है भी यही बात कि काबा क़िब्ला है जिस्म का और शैख़ क़िब्ला है रूह का उसका नाम इरादत है अगर इस तरह सिद्क़ अक़ीदत के साथ एक दरवाज़ा पकड़ ले तो उसको फ़ैज़ ज़रूर आएगा अगर उसका शैख़ ख़ाली है तो शैख़ का शैख़ तो ख़ाली न होगा और बिलफ़र्ज़ वह भी न सही तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तो मअ्दने फ़ैज व मंबअ् अनवार हैं उन से फ़ैज़ आएगा। सिलसिला सही मुत्तसिल होना चाहिए। एक फ़क़ीर मांगने वाला एक दुकान पर खड़ा कह रहा था। एक रुपया दे वह न देता था। फ़क़ीर ने कहा रुपया देता है तो दे वरना तेरी सारी दुकान उलट दूंगा। इस थोड़ी देर में बहुत लोग जमा हो गये इत्तिफ़ाक़न एक साहिबे दिल का गुज़र हुआ जिनके सब लोग मोतक़िद थे उन्होंने दुकानदार से फ़रमाया जल्द रुपया उसे दे वरना दुकान लूट जाएगी लोगों ने अर्ज़ की हज़रत यह बेशरअ् जाहिल क्या कर सकता है फरमाया मैंने उस फ़क़ीर के बातिन पर नज़र डाली कि कुछ है भी मालूम हुआ बिल्कुल ख़ाली है फिर उसके शैख़ को देखा उसे भी ख़ाली पाया उसके शैख़ के शैख़ को देखा उन्हें अह्लुल्लाह से पाया और देखा कि वह मुंतज़िर खड़े हैं कि कब उसकी ज़बान से निकले और मैं दुकान उलट दूं। तो बात क्या थी कि शैख़ का दामन कुव्वत के साथ पकड़े हुए था अइम्म-ए-दीन फरमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दफ़्तर में क़्यामत तक के मुरीदीन के नाम दर्ज हैं। जिस क़द्र गुलामी में हैं या आने वाले हैं हुज़ूर पुर नूर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं रब अज़्ज़ा व जल्ला ने मुझे एक दफ़्तर अता फरमाया कि

मुन्तहाए नज़र तक वसीअ् था और उस में क़्यामत तक के मेरे मुरीदीन के नाम थे और मुझ से फरमाया व हबतहुम लका मैंने यह सब तुम्हें बख़्श दिए।

ज़मीन में मआ ख़ंजर दबा दिया और उसके तमाम अमवाल पर क़ाबिज़ हो गया उसका यह बेटा बहुत सग़ीर सिन था उस ने होश संभाला तो अपने आपको बेकस व बेज़र ही पाया और यह भी न जाना कि उसका बाप कौन था और उसका कुछ माल भी था या नहीं हुक्मे बातिन साबित हुआ गुलाम गर्दन मारा गया और वह तमाम अमवाल वरासतन फ़क़ीर को मिले वही यहां भी मुम्किन कि दुकानदार उस फ़क़ीर के मूरिस का मदयून हो अगरचे वह फ़क़ीर भी उस से वाक़िफ़ न हो न यह दुकानदार उसे पहचानता हो तो यह जबरन दिलाना जब्र नहीं बल्कि हक़ बहक़ दार रसानीदन।

अर्ज़ : किसी शैख़ से बैअ़त करके दूसरे से रुजूअ़ कर सकता है या नहीं।

इरशाद : अगर पहले में कुछ नुक़्सान हो तो बैअत हो सकती है वरना नहीं। अल्बत्ता तज्दीद कर सकता है अदी बिन मुसाफिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं किसी सिलसिले का आए उस से बैअ़त ले लेता हूं सिवाए गुलामाने क़ादरी के कि बहर को छोड़ कर नहर की तरफ़ कोई नहीं आता।

मुअल्लिफ़ : एक शब मस्जिद की घड़ी कोई साहब चुरा कर ले गये अह्ले मुहल्ला ने पुलिस में रिपोर्ट वग़ैरह की उस पर इरशाद फरमाया एक साल सुल्तान की तरफ़ से काबा मुअज़्ज़मा में निहायत बेश क़ीमत सोने की क़नादील लगाने के लिए आएं उन में से एक क़िन्दील ग़ायब हो गई शरीफ़े मक्का ने तहक़ीक़ात की पता चला कि ख़ुद्दामे काबा के सरदार ने ली है शरीफ़ के सामने पेशी हुई उन से पूछा गया वह साहब बोले काबा ग़नी है उसे हाजत नहीं मुझे हाजत थी मैंने ले ली शरीफ़ ने दरगुज़र फरमाई (फिर फरमाया) मस्जिद की कोई शय लाख रुपये की चुरा ले शरीअ़त हाथ न काटेगी बल्कि सज़ाए ताज़ियाना का हुक्म है।

मुअल्लिफ़ : जबल पुर जाने के चार रोज़ बाक़ी और हज़रत मद्दा ज़िल्लहू अल-अक़्दस के वास्ते कपड़े सिलवाना थे सुल्तान हैदर ख़ां ने अर्ज़ की दर्ज़ी को दे दिए जाएं।

मुसलमानाने जबल पुर काठनियावार बंगाल एक मुद्दत से आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू की ख़िदमत में अराइज़ पेश करते रहे कि हुज़ूरे वाला हमारे तेरह, तार बिलाद को अपने क़ुदूमे वाला से मुनव्वर फरमाएं। आला हज़रत क़िबला ने हमेशा अद्मे फ़ुरसत और ज़ुअ़्फ़ व

अर्ज़ : हुज़ूर मज्ज़ूब की क्या पहचान है।

इरशाद : सच्चे मज्ज़ूब की यह पहचान है कि शरीअ़ते मुतह्हरा का कभी मुक़ाबला न करेगा हज़रत सैयदी मूसा सुहाग रहमतुल्लाहि तआला अलैह मशहूर मजाज़ीब से थे अहमदाबाद में मज़ार शरीफ़ है मैं ज़्यारत से मुशर्रफ़ हुआ हूं ज़नाना वज़अ़ रखते थे एक बार क़हत शदीद पड़ा बादशाह व क़ाज़ी व अकाबिर जमा हो कर हज़रत के पास दुआ के लिए गये इंकार फरमाते रहे कि मैं क्या दुआ के क़ाबिल हूं जब लोगों की

इल्तिजा व ज़ारी हद से गुज़री एक पत्थर उठाया और दूसरे हाथ की चूड़ियों की तरफ़ लाए और आसमान की जानिब मुंह उठा कर फरमाया मेंह भेजिए या अपना सुहाग लीजिए यह कहना था कि घटाएं पहाड़ की तरह उमड़ी और जल थल भर दिए एक दिन नमाज़े जुमा के वक़्त बाज़ार में जा रहे थे उधर से क़ाज़ी शहर कि जामा मस्जिद को जाते थे आए उन्हें देख कर अम्र बिल-मारूफ़ किया कि यह वज़अ़ मर्दों को हराम है मरदाना लिबास पहनिए और नमाज़ को चलिए उस पर इंकार व मुक़ाबला न किया चूड़ियां और ज़ेवर और ज़नाना लिबास उतारा और मस्जिद को साथ हो लिए खुतबा सुना जब जमाअत क़ायम हुई और इमाम ने तक्बीरे तहरीमा कही अल्लाहु अक्बर सुनते ही उनकी हालत बदली फरमाया अल्लाहु अकबर मेरा ख़ावन्द हैय्युन ला यमूत है कि कभी न मरेगा और यह मुझे बेवह किए देते हैं इतना कहना था कि सर से पांव तक वही सुर्ख़ लिबास था और वही चूड़ियां अंधी तक़्लीद के तौर पर उनके मज़ार के बाज़ मुजावरों को देखा कि अब तक बालियां कड़े जोशन पहनते हैं यह गुमराही है सूफ़ी साहब तहक़ीक़ और उनका मुक़ल्लिद ज़िन्दीक़।

नमाज़ सब पर बहरहाल फ़र्ज़ है यहां तक कि किसी हामिला औरत के निस्फ़ बच्चा पैदा हो लिया है और नमाज़ का वक़्त आ गया तो अभी नुफ़सा नहीं हुक्म है कि गड्ढे खोदे या देग पर बैठे और इस तरह

नमाज़ पढ़े कि बच्चे को तक्लीफ़ न हो या बीमार है खड़े होने की ताक़त

नमाज़ पढ़े कि बच्चे को तक्लीफ़ न हो या बीमार है खड़े होने की ताक़त नहीं दीवार या असा या किसी शख़्स के सहारे खड़ा हो कर नमाज़ अदा करे और अगर इतनी देर खड़ा नहीं रह सकता तो जितनी देर मुम्किन हो क़्याम फ़र्ज़ है अगरचे इसी क़द्र कि तक्बीरे तहरीमा खड़े हो कर कह ले और बैठ जाए अगर बैठ भी न सके तो लेटे-लेटे इशारों से पढ़े। हुज़ूर नमाज़ की कसरत फरमाते यहां तक कि पाए मुबारक सूज जाते सहाबा किराम अर्ज़ करते हुज़ूर इस क़द्र क्यों तक्लीफ़ गवारा फरमाते हैं मौला तआला ने हुज़ूर को हर तरह की मुआफ़ी अता फरमाई है फरमाते *अफला अकूनु अब्दन शकूरा*। तो क्या मैं कामिल शुक्र गुज़ार बन्दा न हूं यहां तक कि रब अज़्ज़ा व जल्ल ने खुद ही बकमाले मुहब्बत इरशाद फरमाया : *ताहा मा अंज़लना अलैकल-कुरआन लेतशक़ा*। ऐ चौदहवीं रात के चाँद हम ने तुम पर कुरआन इसलिए न उतरा कि तुम मशक़्क़त में पड़ो ग़रज़ नमाज़ मरते वक़्त तक मुआफ़ नहीं रब अज़्ज़ा व जल्ल फरमाता है। *वअ़बुद रब्बका हत्ता यातीकल-यक़ीन*। ऐ बन्दे अपने रब की इबादत किए जा यहां तक कि तुझे मौत आए। एक साहब सालेहीन से थे बहुत ज़ईफ़ हुए पंजगाना मस्जिद की हाज़िरी न छोड़ते एक शब इशा की हाज़िरी में गिर पड़े चोट आई बाद नमाज़ अर्ज़ की इलाही अब मैं बहुत ज़ईफ़ हुआ बादशाह अपने बूढ़े गुलामों को ख़िदमत से आज़ाद कर देते हैं मुझे आज़ाद फरमा उनकी दुआ कुबूल हुई मगर यूं कि सुबह उठे तो मज्नून थे यानी जब तक अक़्ल तक्लीफ़ी बाक़ी है नमाज़ मुआफ़ नहीं है सच्चे मजाज़ीब भी नमाज़ नहीं छोड़ते। अरगचे लोग उन्हें पढ़ते न देखें किसी ने हुज़ूर सैयदना ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से हज़रत सैयदी क़ज़ीबुल-बयान मूसली कुद्दिसा सिर्रहू की शिकायत की कि उनको कभी नमाज़ पढ़ते न देखा इरशाद फरमाया उस से कुछ न कहो उसका सर हर वक़्त ख़ान-ए-काबा में सुजूद में है।

अर्ज़ : मर्द को चोटी रखना जाइज़ है या नहीं बाज़ फ़क़ीर रखते हैं।

इरशाद : हराम है हदीस में फरमाया : *लअ़नल्लाहु अल-मुत श्बेहीना मिनर्रिजाले बिन्निसाए वल-मुत शबिहाते मिनन्निसाए बिर्रिजाले*। अल्लाह की लानत है ऐसे मर्दों पर जो औरतों से मुशाबेहत रखें और ऐसी औरतों पर जो मर्दों से मुशाबेहत पैदा करें।

OK

अर्ज़ : वलदुल-हराम के पीछे नमाज़ हो जाएगी या नहीं।

देखना भी हराम है दुर्रे मुख़्तार व हाशिया अल्लामा तहतावी में इन मसाइल की तस्रीह है आजकल लोग उन से ग़ाफ़िल हैं मुत्तक़ी लोग जिनको शरीअत की एहतियात है ना वाकफ़ी से रीछ या बन्दर का तमाशा या मुर्गों की पाली देखते हैं और नहीं जानते कि उस से गुनहगार होते हैं। हदीस में इरशाद है कि अगर कोई मज्मा ख़ैर का हो और वह न जाने पाया और ख़बर मिलने पर उस ने अफ़सोस किया तो इतना ही सवाब मिलेगा जितना हाज़िरीन को और अगर मज्मा। शुरका हो उसने अपने न जाने पर अफसोस किया तो जो गुनाह उन हाज़िरीन पर होगा वह उस पर भी।

अर्ज़ : बुज़ुर्गाने दीन की तसावीर बतौर तबर्रुक लेना कैसा है।

इरशाद : काबा मुअज़्ज़मा में हज़रत इब्राहीम व हज़रत इस्माईल व हज़रत मरयम की तसावीर बनी थीं कि यह मुतबर्रक हैं ना जाइज़ फ़ेअ्ल था हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने खुद दस्ते मुबारक से उन्हें धो दिया। OK

अर्ज़ : नमाज़े फज्र में दुआ कुनूत पढ़ना क्या असर रखता है और उसके पढ़ने का क्या तरीक़ा है।

इरशाद : अगर मआज़ल्लाह कोई नाज़ला हुआ और सख़्त नाज़ला आम बला हो और सख़्त बला अल्लाह पनाह में रखे तरीक़ा उसका यह है कि दूसरी रकअत में अल्हम्दु व सूरः के बाद अल्लाहु अक्बर कह कर इमाम दुआए कुनूत पढ़े और मुक़्तदी आहिस्ता-आहिस्ता दुआ मांगें या आमीन कहें।

अर्ज़ : वुज़ू करने का मस्नून तरीक़ा क्या है।

इरशाद : वुज़ू करने जब बैठे पहले। *बिस्मिल्लाहिल-अज़ीम वल्हम्दु लिल्लाहि अला दीनिल-इस्लाम*। पढ़ ले जो वुज़ू बिस्मिल्लाह से शुरू किया जाता है तमाम बदन को पाक कर देता है वरना जितने पर पानी गुज़रेगा उतना ही पाक होगा फिर दोनों हाथ पहुंचों तक तीन-तीन बार इस तरह धोए कि पहले सीधे हाथ को उलटे हाथ से पानी डाल कर तीन बार फिर उलटे को सीधे हाथ से पानी डाल कर तीन बार और उसका ख़्याल रहे कि उंगलियों की घाइयाँ पानी बहने से न रह जाएं फिर तीन बार कुल्ली ऐसी करे कि मुंह की तमाम जड़ों और दांतों की सब खिड़कियों में पानी पहुंच जाए कि वुज़ू में इसी तरह कुल्ली करना

अर्ज़ : यह सही है कि शबे मेअ्राज मुबारक जब अुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अर्श बरीं पर पहुंचे नअ्लैन पाक उतारना चाहें कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को वादी-ए-ऐमन में नअ्लैन शरीफ़ उतारने का हुक्म हुआ था फौरन ग़ैब से निदा आई ऐ हबीब तुम्हारे मआ नअ्लैन शरीफ़ रौनक़ अफ़रोज़ होने से अर्श की ज़ीनत व इज़्ज़त ज़्यादा होगी।

इरशाद : यह रिवायत महज बातिल व मौज़ूअ् है। OK

अर्ज़ : शबे मेअ्राज जब बुराक़ हाज़िर किया गया हुज़ूर आबदीदा हुए हज़रत जिब्रील ने सबब पूछा फरमाया आज मैं बुराक़ पर जा रहा हूं कल क़्यामत के दिन मेरी उम्मत बरहना पा पुल सिरात की राह तय करेगी यह तक़ाज़ाए मुहब्बत व शफ़्क़ते उम्मत के मुदाफ़िक़ नहीं इरशादे बारी हुआ यूंही एक एक बुराक़ बरोज़ हश्र तुम्हारी हर उम्मती की क़ब्र पर भेजेंगे यह रिवायत सही है या नहीं।

इरशाद : बिल्कुल बेअसल है ऐसी ही और भी बहुत सी रिवायात बिल्कुल बेअसल व बेहूदा हैं क्या कहा जाए।

किसी से कोई कलिमा सादिर हो जिसके सौ मानी हो सकते हों ९९ पर कुफ़्र लाज़िम आता हो और एक पहलू इस्लाम की तरफ़ जाता हो उसके कुफ़्र का हुक्म न करेंगे जब तक मालूम न हो कि उस ने कोई पहलूए कुफ़्र मुराद लिया मस्अला तो यह था और बे दीनों ने क्या से क्या कर लिया उसका बहुत वाज़ेह व रौशन बयान हमारी किताब तम्हीदे ईमान बेआयाते कुरआन में है और यहां यह भी मालूम हो गया कि जो मुतलक़न ग़ैब का मुंकिर हो वह काफिर हो गया जो लफ़्ज़ उस मुनाफ़िक़ ने कहे जिसे कुरआने अज़ीम ने फरमाया तू बहाने न बना तू काफिर हो चुका यही तो था कि रसूल ग़ैब क्या जाने बेऐनेही यही तक्वियतुल-ईमान में लिखा कि "ग़ैब की बातें अल्लाह जाने रसूल को क्या ख़बर।

अर्ज़ : मुहर्रम की मजालिस में जो मर्सिया ख़्वानी वग़ैरह होती है सुनना चाहिए या नहीं।

इरशाद : मौलाना शाह अब्दुल-अज़ीज़ साहब की किताब जो अरबी में है वह या हसन मियां मरहूम मेरे भाई की किताब आईन-ए-क़्यामत में सही रिवायात हैं उन्हें सुनना चाहिए बाक़ी ग़लत रिवायात के पढ़ने से न पढ़ना और न सुनन बहुत बेहतर है।

अर्ज़ : और उन मजालिस में रिक्क़त आना कैसा।

इरशाद : रिक्क़त आने में हरज नहीं बाक़ी रफ़्ज़ा की हालत बनाना जाइज़ नहीं कि *मन तशब्बहा बेक़ौमिन फ़हुवा मिन्हुम*। नीज़ हक़ सुबहानहू ने नेमतों के ऐलान को फरमाया और मुसीबत पर सब्र का हुक्म दिया है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की विलादत बारह (१२) रबीउल-अव्वल शरीफ़ यौमे दो शंबा को है और उसी में वफ़ात शरीफ़ है तो अइम्मा ने खुशी व मुसर्रत का इज़्हार किया ग़म परवरी का हुक्म शरीअत नहीं देती। OK

अर्ज़ : यह सही है कि शबे मेअ्राज मुबारक जब अुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अर्श बरीं पर पहुंचे नअ्लैन पाक उतारना चाहें कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम को वादी-ए-ऐमन में नअ्लैन शरीफ़ उतारने का हुक्म हुआ था फौरन ग़ैब से निदा आई ऐ हबीब तुम्हारे मआ नअ्लैन शरीफ़ रौनक़ अफ़रोज़ होने से अर्श की ज़ीनत व इज़्ज़त ज़्यादा होगी।

इरशाद : यह रिवायत महज बातिल व मौज़ूअ् है।

रेशमी बाने का दबीज़ लिबास उनको पहनना जाइज़ है चालीस दिन से ज़्यादा लबीं और चेहरे का बाल और नाखुन बढ़ाना उनको जाइज़ है औरों को यह सब बातें हराम हैं फौजी क़ानून आम क़ानून से जुदा होता है उस में सियाह ख़िज़ाब दाख़िल है सैयदना इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु मुजाहिद थे उन्हें जाइज़ था तुम को हराम है।

अर्ज़ : जाहिल फ़क़ीर का मुरीद होना शैतान का मुरीद होना है।

इरशाद : बिला शुबह।

OK

अर्ज़ : अक्सर बाल बढ़ाने वाले लोग हज़रत गैसू दराज़ को दलील लाते हैं।

इरशाद : जिहालत है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बकसरत अहादीसे सहीहा में उन मर्दों पर लानत फरमाई है जो औरतों से मुशाबिहत पैदा करें और उन औरतों पर जो मर्दों से, और तशब्बुह के लिए हर बात में पूरी वज़अ् बनाना ज़रूर नहीं एक ही बात में मुशाबेहत काफी है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक औरत को मुलाहिज़ा फरमाया कि मर्दों की तरह कन्धे पर कमान लटकाए जा रही है उस पर भी यही फरमाया कि उन औरतों पर लानत जो मर्दों से तशब्बुह करें उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा ने एक औरत को मर्दाना जूता पहने देखा उस पर भी यही हदीस रिवायत फरमाई कि मर्दों से तशब्बुह करने वालियां मल्ऊन हैं जब सिर्फ़ जूते या कमान लटकाने में मुशाबेहत मूजिबे लानत है तो औरतों के से बाल बढ़ाना उस से सख़्त तर मूजिबे लानत होगा कि वह एक ख़ार्जी चीज़ हैं और यह ख़ास जुज़्व व बदन तो शानों से नीचे गैसू रखना बहुक्म अहादीसे सहीहा ज़रूर मूजिबे लानत है और चोटी गुंधवाना और ज़्यादा और उसमें मुबाफ़ डालना और उस से सख़्त तर हज़रत सैयदी मुहम्मद गैसू दराज़ कुद्दिसा सिर्रहू ने तशब्बुह न किया था एक गैसू महफ़ूज़ रखा था और उसके लिए एक वज्ह ख़ास थी कि अकाबिर उलमा व अजिल्ल-ए-सादात से थे जवानी की उम्र थी सादात की तरह शानों तक दो गैसू रखते थे कि इस क़द्र शरअन जाइज़ बल्कि सुन्नत से साबित है एक बार सरे राह बैठे थे हज़रत नसीरुद्दीन महमूद चिराग़ दिल्ली रहमतुल्लाहि अलैहि की सवारी निकली उन्होंने उठ कर ज़ानवए

दूसरी नमाज़ के वक़्त में इतनी उस्अत है कि क़ज़ा पढ़ कर वक़्ती पढ़े उस पर फ़र्ज़ है कि ऐसी ही करे वरना यह वक़्ती नमाज़ भी बातिल होगी।

अर्ज़ : अगर वबाई बीमारी की वजह से सब हम्साए मकान छोड़-छोड़ कर भाग गये हों और किसी हामिला औरत के अय्यामे हमल पूरे हो चुके हों तो उसका शौहर बख़्याल तन्हाई दूसरी जगह मुन्तक़िल कर सकता है या नहीं।

इरशाद : नीयत अगर उसकी यही है कोई हरज नहीं वबा से भागने पर ठिकाना जहन्नम में है वैसे अपनी ज़रूरियात के लिए जाने आने की मुमानअत नहीं।

अर्ज़ : ख़ानदाने क़ादरीया में जो शख़्स बैअत हो और वह मुर्तकिब हो मज़ामीर के साथ गाना सुनने का।

इरशाद : फासिक़ है।

OK

अर्ज़ : हुज़ूर अजमेर शरीफ़ में ख़्वाजा साहब के मज़ार पर औरतों को जाना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : गुनीयह में है यह न पूछो कि औरतों का मज़ारात पर जाना जाइज़ है या नहीं बल्कि यह पूछो कि उस औरत पर किस क़द्र लानत होती है अल्लाह की तरफ़ से और किस क़द्र साहिबे क़ब्र की जानिब से। जिस वक़्त वह घर से इरादा करती है लानत शुरू हो जाती है और जब तक वापस आती है मलाइका लानत करते रहते हैं सिवाए रौज़-ए-अनवर के किसी मज़ार पर जाने की इजाज़त नहीं वहां की हाज़िरी अल्बत्ता सुन्नते जलीला अज़ीमा क़रीब बवाजिबात है और कुरआने अज़ीम ने उसे मग़्फ़िरत जुनूब का तिरयाक़ बताया।

अगर वह जब अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उनके लिए मुआफ़ी मांगे तो ज़रूर अल्लाह को तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पाएंगे खुद हदीस में इरशाद हुआ। *मन ज़ार क़बरी वजबत लहू शफ़ाअती*। जो मेरे मज़ारे करीम की ज़ियारत को हाज़िर हुआ उसके लिए मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गई, दूसरी हदीस में है। *मन हज्जा व लम यज़ुरनी फ़क़द जफ़ानी*। जिसने हज किया और मेरी ज़ियारत को न आया बेशक उसने मुझ पर जफा की एक तो यह अदाए वाजिब दूसरे क़बूले तोबा, तीसरे दौलते शफ़ाअत हासिल होना चौथे सरकार के साथ मआज़ल्लाह जफा से

(९) तमस्खुर वैसे ही मम्नूअ़ और मस्जिद में सख़्त नाजाइज़ या हंसना मना है क़ब्र में तारीकी लाता है हां मौक़ा से तबस्सुम में हरज नहीं।

(१०) फ़र्शे मस्जिद पर कोई शैय फेंकी न जाए बल्कि आहिस्ता से रख दे मौसमे गरमा में लोग पंखा झलते-झलते फेंक देते हैं या लकड़ी छतरी वग़ैरह रखते वक़्त दूर से छोड़ दिया करते हैं उसकी मुमानअत है ग़रज़ मस्जिद का एहतराम हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

(११) मस्जिद में हदस मना है ज़रूरत हो तो बाहर चला जाए लिहाज़ा मोअ्तकिफ को चाहिए कि अय्यामे ऐतकाफ में थोड़ा खाए पेट हल्का रखे कि क़ज़ाए हाजत के वक़्त के सिवा किसी वक़्त इख़राज रीह की हाजत न हो वह उसके लिए बाहर न जा सकेगा।

(१२) क़िब्ला की तरफ़ पांव फैलाना तो हर जगह मना है मस्जिद में किसी तरफ न फैलाए कि ख़िलाफ़े आदाब दरबार है हज़रत इब्राहीम अदहम कुद्दिसा सिर्रहू मस्जिद में तन्हा बैठे थे पांव फैला लिया गोशा मस्जिद से हातिफ़ ने आवाज़ दी इब्राहीम बादशाहों के हुज़ूर में यूंही बैठते हैं मअन पांव समेटे और ऐसे समेटे कि वक़्त इंतिक़ाल ही फैले।

OK (१३) इस्तेमाल जूता अगर पास हो मस्जिद में पहन कर जाना गुस्ताख़ी व बेअदबी है अदब व तौहीन का राज़ उर्फ़ व आदत पर है हां बिल्कुल नया जूता पहन सकता है और उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है जब कि पंजा इतना सख़्त न हो कि सज्दे में उंगलियों का पेट ज़मीन पर न बिछने दे बहरुर्राइक़ में है अमीरुल-मुमिनीन मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम जूते के दो जोड़े रखते इस्तेमाली पहन कर दरवाज़ा मस्जिद तक जाते दूसरा ग़ैर इस्तेमाली पहन कर मस्जिद में क़दम रखते।

(१४) मस्जिद में यहां के किसी काफिर को आने देना सख़्त नाजाइज़ और मस्जिद की बेहुर्मती है फ़िक़्ह में जवाज़ है तो ज़िम्मी के लिए और यहां के काफिर ज़िम्मी नहीं कैसा शदीद ज़ुल्म है वह तुम को भंगी की तरह समझें जिस चीज़ को तुम्हारा हाथ लग जाए उसे नापाक जानें सौदा दें तो दूर से डाल दें पैसे लें तो अलग रखवालें हालांकि उनकी नजासत पर कुरआने करीम शाहिद है तुम उन नजिसों को मस्जिद में आने की इजाज़त दो कि अपने नापाक पांव तुम्हारे माथा रखने की जगह रखें अपने गन्दे बदनों से तुम्हारे रब के दरबार में आएं अल्लाह हिदायत फरमाए।

फर्श वाले तेरी शौकत का उलू क्या जानें
खुस्रुवा व अर्श पे उडता है फुरेरा तेरा

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलेहिल-करीम।

बाद अस्र किसी साहब ने एक मरीज़ का जिक्र करते हुए अर्ज़ किया कि बेहद बुख़ार है उस पर इरशाद फरमाया बेहद बुख़ार के तो यह मानी हैं कि उसकी इंतिहा ही नहीं कभी उतरेगा ही नहीं। कोस्ते तो आप खुद हैं (फिर फरमाया) सूरः मुजादला शरीफ़ जो अट्ठाईसवीं पारा की पहली सूरः है बाद अस्र तीन मरतबा पढ़ कर पानी पर दम कर के पिलाइए।

अर्ज़ : अमामा के दोनों सिरे का मदार हों तो क्या हुक्म है।

इरशाद : इसमें राजेह यह है कि अगर चार अंगुल से ज़ाइद है तो मम्नूअ़ है।

अर्ज़ : हुज़ूर तांबे या लोहे की अंगूठी का क्या हुक्म है। OK

इरशाद : मर्द व औरत दोनों के लिए मक्रूह है।

अर्ज़ : इसकी क्या वजह है कि चांदी की अंगूठी जाइज़ रखी जाए जो उस से बेश बहा है और तांबे वग़ैरह की मक्रूह।

इरशाद : चांदी की अंगूठी तज़्कीरे आख़िरत के लिए जाइज़ रखी गई है कि सोना चांदी जन्नतियों का ज़ेवर है तांबे वग़ैरह का वहां क्या काम (फिर फरमाया) एक साहब ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुए उनके हाथ में पीतल की अंगूठी थी इरशाद फरमाया, क्या हुआ कि मैं तुम्हारे हाथ में बुतों का ज़ेवर देखता हूं उन्होंने उतार कर फेंक दी दूसरे दिन लोहे की अंगूठी पहन कर हाज़िर हुए इरशाद फरमाया, क्या हुआ कि मैं तुम्हारे हाथ में दोज़ख़ियों का ज़ेवर देखता हूं उन्होंने उतार कर फेंक दी और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम किस चीज़ की अंगूठी बनाऊं। इरशाद फरमाया, चांदी की बनाव और एक मिस्क़ाल (यानी साढ़े चार माशे) पूरी न करो।

अर्श : टोपी या कपड़े वग़ैरह में सच्चा काम हो तो क्या हुक्म है।

इरशाद : अगर चार अंगुल तक है तो हरज नहीं और अगर चन्द बोटियां हैं और हर एक चार अंगुल से ज़्यादा नहीं और दूर से देखने

नहीं होते हैं लेकिन चूंकि मुस्तकिल हैं इसलिए अगर रेशम के हों तो नाजाइज़।

अर्ज़ : तांबे पीतल के तावीज़ों का क्या हुक्म है। OK

इरशाद : मर्द व औरत दोनों को मक्रूह और सोने चांदी के मर्द को हराम औरत को जाइज़।

अर्ज़ : चांदी और सोने की घड़ी रख सकता है या नहीं।

इरशाद : रख सकता है अल्बत्ता उस में वक़्त नहीं देख सकता कि हराम है। इसी तरह आरसी पहनने में औरत के लिए कोई हरज नहीं और उसमें मुंह देखना हराम। (फिर फरमाया) चांदी सोना सिर्फ़ पहनना औरत के लिए हलाल है बाक़ी तर्क़ इस्तेमाल उसके लिए भी हराम हैं हां खाना दोनों के लिए जाइज़ है वर्क़ चांदी सोने के खाएं या रेज़ह रेज़ह करके या कश्ता बना कर।

अर्ज़ : जो दरख़्त नजिस पानी से सींचा गया हो उसके फल खाना जाइज़ हैं।

इरशाद : जाइज़ है।

अर्ज़ : जिस गाय को ग़सब या सरक़ा वग़ैरह का भूसा दिया जाए उसका दूध पीना कैसा है।

इरशाद : दूध हराम न होगा हां तोरअ् एक बड़ी चीज़ है। एक बीबी इमाम अहमद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के पास तशरीफ़ लाईं और फरमाया मैं अपनी छत पर सीती हूं रौशनी इतनी नहीं कि सूइ में से अगर डोरा निकल जाए तो डाल सकूं बादशाह की सवारी निकलती है उसकी रौशनी में डोर डाल सकती हूं या नहीं कि वह रौशनी ज़ालिम की है उसके रुपये में हलाल व हराम सब है आप ने उन से दरयाफ़्त फरमाया तुम कौन हो फरमाया में बहन हूं बिशर हाफ़ी (रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा) की इमाम ने फरमाया वरअ् तुम्हारे घर से पैदा हुआ तुम्हारे लिए उस रौशनी में डोर डालना जाइज़ नहीं फिर फरमाया हमारे इमाम आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तिजारत करते थे हज़ारों रुपये लोगों पर क़र्ज़ थे तक़ाज़े के वास्ते दोपहर को तशरीफ़ ले जाया करते और मक़्रूज़ की दीवार के साए से एलाहिदा खड़े होते कि यह क़र्ज़ से नफ़ा हासिल करने में दाख़िल न हो जाए एक शख़्स पर हुज़ूर के दस हज़ार आते थे वादा गुज़रे मुद्दत हो चुकी थी एक मरतबा आप तशरीफ़

हुए और होंगे।

अर्ज़ : समदन के साथ निकाह कर सकता है। OK

इरशाद : हां।

अर्ज़ : ख़ूर्जी जो घोड़े की ज़ीन में लटकी रहती है उस में कुरआन शरीफ़ रखा हो ऐसी हालत में सवार हो सकता है।

इरशाद : अगर गले में नहीं लटका सकता है और ख़ूर्जी में रखने पर मजबूर महज़ है तो जाइज़ है।

अर्ज़ : बअ्द तुलूअ् फज्र के सुन्नतुल-फज्र में तहियतुल-वुज़ू और तहियतुल-मस्जिद की नीयत जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : नहीं कि बाद तुलूअ् फज्र सिवाए सुन्नते फज्र के और कोई नफ़्ल पढ़ना नाजाइज़ है हां बेग़ैर नीयत के तहयतुल-वुज़ू व तहियतुल-मस्जिद सुन्नते फज्र ही से अदा हो जाएंगी।

अर्ज़ : हुज़ूर १३ साल में मेरी अहलिया के चार लड़के और दो लड़कियां पैदा हुए जिनमें से पांच औलादें इंतिक़ाल कर गईं किसी की उम्र ३ साल की किसी की दो साल किसी की एक साल हुई और सब को एक ही बीमारी लाहिक़ हुई यानी पसली और उम्मुस्सिबयान फिल-हाल सिर्फ़ एक लड़की ३ साला हयात है हुज़ूर दुआ फरमाएं और इन अमराज के वास्ते कोई अमल जो मुनासिब हो इरशाद फरमाएं।

इरशाद : मौला तआला अपनी रहमत फरमाए अब जो हमल हो उसे दो महीने न गुज़रने पाएं कि यहां इत्तिला दीजिए और ज़ौजा और उनकी वालिदा का नाम भी मालूम होना चाहिए उस वक़्त से इन्शाअल्लाह तआला बन्दोबस्त किया जाए अपने घर में पाबन्दी नमाज़ की ताकीद शदीद रखिए और पांचों नमाज़ों के बाद आयतुल-कुर्सी एक-एक बार ज़रूर पढ़ा करें और अलावा नमाज़ों के एक बार सुबह सूरज निकलने से पहले और शाम को सूरज डूबने से पहले और सोते वक़्त जिन दिनों में औरतों को नमाज़ का हुक्म नहीं उन में भी उन तीन वक़्त की आयतुल-कुर्सी न छूटे मगर उन दिनों में आयते कुरआन मजीद की नीयत से न पढ़ें बल्कि उस नीयत से कि अल्लाह तआला की तारीफ़ करते हैं। और जिन दिनों में नमाज़ का हुक्म है उन में उसका भी इल्तिज़ाम रखें कि तीनों कुल ३-३ बार सुबह व शाम और सोते वक़्त पढ़ें सुबह से मुराद यह है कि आधी रात ढलने से सूरज निकलने तक और

इरशाद : ख़ुशबू है जाइज़ है।

अर्ज़ : अगर बीसल पुर से बदायूं जाना है और रास्ते में बरैली उतरा तो क़स्र करे गाया नहीं।

इरशाद : इस सूरत में क़स्र नहीं कि सफ़र के दो टुकड़े हो गये।

अर्ज़ : एक शख़्स बरैली का साकिन मुरादाबाद में दुकान खोले और हमेशा वहां तिजारत का इरादा हो और कभी-कभी अपने अह्लो अयाल को भी ले जाया करे इस सूरत में मुरादाबाद वतन असली होगा या वतन इक़ामत।

इरशाद : वतन असली न होगा हाँ अगर वहां निकाह कर ले तो हो जाएगा।

अर्ज़ : अगर वहाबी निकाह पढ़ा जाए तो हो जाएगा या नहीं।

इरशाद : निकाह तो हो ही जाएगा इस वास्ते कि निकाह नाम बाहमी ईजाब व क़ुबूल का है अगरचे बामन पढ़ा दे चूंकि वहाबी से पढ़वाने में उसकी ताज़ीम होती है जो हराम है लिहाज़ा एहतराज़ लाज़िम है।

अर्ज़ : वलीमा निकाह की सुन्नत है या ज़ुफ़ाफ़ की और नाबालिग़ का निकाह हो तो वलीमा कब और किस दिन करे।

इरशाद : वलीमा ज़ुफ़ाफ़ की सुन्नत है और नाबालिग़ भी बादे ज़ुफ़ाफ़ के वलीमा करे और वलीमा शबे ज़ुफ़ाफ़ की सुबह को करे।

अर्ज़ : निकाह के बाद छोहारे लुटाने का जो रिवाज है यह कहीं साबित है या नहीं।

इरशाद : हदीस शरीफ़ में लूटने का हुक्म है और लुटाने में भी कोई हरज नहीं और यह हदीस दारु क़ुतनी व बैहक़ी व तहतावी से मरवी है।

अर्ज़ : ख़िज़ाब सियाह अगर वस्मा से हो।

इरशाद : वस्मा से हो या तस्मा से सियाह ख़िज़ाब हराम है।

अर्ज़ : कोई सूरत भी उसके जवाज़ की है।

इरशाद : हां जिहाद की हालत में जाइज़ है।

अर्ज़ : अगर जवान औरत से मर्द ज़ईफ़ निकाह करना चाहे तो ख़िज़ाब सियाह कर सकता है या नहीं।

इरशाद : बूढ़ा बैल सींग काटने से बछड़ा नहीं हो सकता।

अर्ज़ : बाज़ कुतुब में है कि वक़्ते शहादत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु

जुमा तो जुमा जुहर भी छोड़ देंगे। *अरऐतल्लज़ी यन्हा अब्दन इज़ा सल्ला*। से ख़ौफ़ करना चाहिए मौला अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल-करीम से मन्कूल है कि एक शख़्स को तुलूअ् आफ़ताब के वक़्त नफ़्ल पढ़ते हुए देख कर मना न फरमाया जब वह पढ़ चुका तो मस्अला तालीम फरमा दिया।

अर्ज़ : हुज़ूर की क़सम खा कर ख़िलाफ़ करने से कफ़्फ़ारा लाज़िम आएगा या नहीं।

इरशाद : नहीं।

अर्ज़ : क़सम हुज़ूर की खाना जाइज़ है।

इरशाद : नहीं।

OK

अर्ज़ : क्या बे अदबी है।

इरशाद : हां।

अर्ज़ : खेलाल तांबे पीतल का गले में लटकाना कैसा है।

इरशाद : नाजाइज़ है क्योंकि यह तअलीक़ के हुक्म में है वैसे जाइज़ है और सोने चांदी का हराम है बल्कि औरतों को भी ऐसे ही सोने चांदी के जुरूफ़ में खाना जाइज़ है और घड़ी की चैन भी आम अर्ज़ी कि चांदी की हो या पीतल की हां डोरा बांध सकता है।

अर्ज़ : जवान ग़ैर महरिम औरत के सलाम का जवाब देना चाहिए या नहीं।

इरशाद : दिल में जवाब दे।

अर्ज़ : अगर ग़ायबाना ना महरिम को सलाम कहलाए।

इरशाद : यह भी ठीक नहीं।

अर्ज़ : सुन्नतुल-फ़ज्र अव्वले वक़्त पढ़े या मुत्तसिल फ़र्ज़ों के।

इरशाद : अव्वले वक़्त पढ़ना औला है हदीस शरीफ़ में है जब इंसान सोता है शैतान तीन गिरह लगा देता है जब सुबह उठते ही वह रब अज़्ज़ा व जल्ला का नाम लेता है एक गिरह खुल जाती है और वुज़ू के बाद दूसरी और जब सुन्नतों की नीयत बांधी तीसरी भी खुल जाती है लिहाज़ा अव्वले वक़्त सुन्नतें पढ़ना औला है।

अर्ज़ : जुहर के वक़्त बग़ैर सुन्नत पढ़े इमामत कर सकता है।

इरशाद : बिला उज़्र न चाहिए।

अर्ज़ : सुन्नते जुमा अगर खुतबा शुरू होने की वजह से छूट जाएं तो

बाद नमाज़ जुमा पढ़े या नहीं।

इरशाद : पढ़े और ज़रूर पढ़े।

अर्ज़ : बाज़ जगह दस्तूर है कि मुसलमान हिन्दू की आरहत में माल फरोख़्त करता है और इस सूरत में हिन्दू को कमीशन देना पड़ता है और वह लोग कमीशन के साथ चार आने सेकड़ा इस बात का लेते हैं कि इस रक़म का अनाज ख़रीद कर कबूतरों को डाला जाएगा यह देना जाइज़ है या नाजाइज़।

इरशाद : अगर जानवरों के लिए ले लें कुछ हरज नहीं अल्बत्ता बुत वग़ैरह के लिए नाजाइज़ है।

अर्ज़ : दस्ते ग़ैब व कीमिया हासिल करना कैसा है। OK

इरशाद : दस्ते ग़ैब के लिए दुआ करना मुहाल आदी के लिए दुआ करना है जो मिस्ल मुहाल अक़्ली व जाती के हराम है और कीमिया तज़ैयुअ् माल है और यह हराम है आज तक कहीं साबित नहीं हुआ कि किसी ने बना ली हो। (जैसे कोई दोनों हाथ फैलाए पानी की तरफ़ बैठा हो और वह पानी यूं उसे पहुंचने वाला नहीं) दस्ते ग़ैब जो कुरआने अज़ीम में इरशाद है उसकी तरफ़ लोगों को तवज्जोह ही नहीं कि फरमाता है। *वमन यत्तक़िल्लाहा यज्अल लहू मख़रजा। व यरज़ुक़ुहू मिन हैसु ला यहतसिब। यत्तक़िल्लाह*। पर अमल नहीं वरना हक़ीक़तन सब कुछ हासिल हो सकता है मेरे एक दोस्त मदीना तैयबा के रहने वाले उनका मदीना मुनव्वरा से भेजा हुआ एक ख़त इतवार के रोज़ मुझे मिला जिसमें पचास रुपये (और जो अल्लाह से डरे उसके लिए नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उसका गुमान न हो।) की तलब थी बुध के रोज़ यहां से डाक जाती थी जो हफ़्ता को डाक के जहाज़ में रवाना हो जाती थी पीर के दिन तो मुझे ख़्याल ही न रहा मंगल के रोज़ याद आया देखा तो अपने पास पांच पैसे भी नहीं वह दिन भी ख़त्म हुआ नमाज़े मग़्रिब पढ़ कर और यह फ़िक्र कि कल बुध है और अभी तक रुपये की कोई सबील नहीं हुई मैंने सरकार में अर्ज़ किया कि हुज़ूर ही में भेजना हैं अता फरमाए जाएं कि बाहर से हसनैन मियां (आला हज़रत मद्दा ज़िल्लहू के भतीजे) ने आवाज़ दी 'सेठ इब्राहीम मुम्बई से मिलने आए हैं" मैं बाहर आया और मुलाक़ात की चलते वक़्त इक्कियावन रुपये उन्होंने दिए हालांकि ज़रूरत सिर्फ़

आगे उसके यह है *या मुज़िल्लु तज़ल्लत फ़ी ज़िल्लतिका वज़्ज़िल्लते फ़ी ज़िल्लते ज़िल्लतिका या ख़ाफ़िज़ु तख़्फ़ज़्तु फ़ी ख़फ़्ज़तिका वल-ख़फ़्ज़े फ़ी ख़फ़्ज़े ख़फ़्ज़तिका।* अब कहिए यह कुफ़्र हुआ या नहीं लेकिन वह काफिर न हुए इस वास्ते कि उनको शैतान ने बहका दिया उनको इस अरबी इबारत का तरजमा नहीं मालूम (फिर फरमाया) सूफ़ियाए किराम फरमाते हैं।

सूफ़ी बेइल्म मस्ख़रह शैतान अस्त वह जानता ही नहीं शैतान अपनी बाग डोर पर लगा लेता है हदीस में इरशाद हुआ। *अल-मुतअब्बदु बेग़ैरि फ़िक़्हे कल-हिमारे फ़ित्ताहून।* बेग़ैर फ़िक़्ह कि आबिद बनने वाला, आबिद न फरमाया बल्कि आबिद बनने वाला फरमाया यानी बेग़ैर फ़िक़्ह के इबादत हो ही नहीं सकती आबिद बनता है वह ऐसा है जैसे चक्की में गधा कि मेहनते शाक़्क़ा करे और हासिल कुछ नहीं। एक साहब औलिया-ए-किराम में से थे *क़द सन्नल्लाहु तआला बेइसरारेहिम।* उन्होंने एक साहिबे रियाज़त व मुजाहिदा का शहरा सुना उनके बड़े-बड़े दुआवी सुनने में आए उनको बुलाया और फरमाया यह क्या दावे हैं जो मैंने सुने अर्ज़ की मुझे दीदारे इलाही रोज़ होता है उन आंखों से समुन्द्र पर खुदा का अर्श बिछता है और उस पर खुदा जल्वा फरमा होता है अब अगर उनको इल्म होता तो पहले ही समझ लेते कि दीदारे इलाही दुनिया में बहालते बेदारी उन आंखों से मुहाल है सिवाए सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के और हुज़ूर को भी *फ़ौक़स्समावाते वल-अर्श* दीदार हुआ दुनिया नाम है समावात व अर्ज़ का ख़ैर उन बुजुर्ग ने एक आलिम साहब को बुलाया उन से फरमाया कि वह हदीस पढ़ो जिस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि शैतान अपना तख़्त समुन्द्र पर बिछाता है उन्होंने अर्ज़ की कि बेशक सैयदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है। *इन्ना इब्लीसा यज़ओ अरशुहू अलल-बहरे* शैतान अपना तख़्त समुन्द्र पर बिछाता है उन्होंने जब यह सुना तो समझे कि अब तक मैं शैतान को खुदा समझता रहा उसी की इबादत करता रहा उसी को सज्दे करता रहा कपड़े फाड़े और जंगल को चले गये फिर उनका पता न चला।

सैयदी अबुल-हसन जोसक़ी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा हैं हज़रत सैयदी अबुल-हसन अली बिन हैती रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के

अब्दुल-वहाब अकाबिर औलियाए किराम में से हैं हज़रत सैयदी अहमद बदवी कबीर के मज़ार पर बहुत बड़ा मेला और हुजूम होता था इस मज्मा में चले आते थे एक ताजिर की कनीज़ पर निगाह पड़ी फ़ौरन निगाह फेर ली कि हदीस में इरशाद हुआ। *अन्नज़रतु इल्ला वलीयुन लका वस्सानियता अलैका*। पहली नज़र तेरे लिए है और दूसरी तुझ पर यानी पहली नज़र का कुछ गुनाह नहीं और दूसरी का मुवाख़ज़ा होगा ख़ैर निगाह तो आपने फेर ली मगर वह आपको पसन्द आई जब मज़ार शरीफ़ पर हाज़िर हुए इरशाद फरमाया अब्दुल-वहाब वह कनीज़ पसन्द है अर्ज़ की हां अपने शैख़ से कोई बात छुपाना न चाहिए इरशाद फरमाया अच्छा हम ने तुम को वह कनीज़ हिबा की अब आप सुकूत में

हैं कि कनीज़ तो उस ताज़िर की है और हुज़ूर हिबा फरमाते हैं मअन वह ताजिर हाज़िर हुआ और उसने वह कनीज़ मज़ारे अक़्दस की नज़्र की ख़ादिम को इशारा हुआ उन्होंने आपकी नज़्र कर दी इरशाद फरमाया अब्दुल-वहाब अब देर काहे कि फलां हुजरा में ले जाओ और अपनी हाजत पूरी करो।

हैं कि कनीज़ तो उस ताजिर की है और हुज़ूर हिबा फरमाते हैं मअन वह ताजिर हाज़िर हुआ और उसने वह कनीज़ मज़ारे अक़्दस की नज़्र की ख़ादिम को इशारा हुआ उन्होंने आपकी नज़्र कर दी इरशाद फरमाया अब्दुल-वहाब अब देर काहे कि फलां हुजरा में ले जाओ और अपनी हाजत पूरी करो।

अर्ज़ : अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम और औलियाए किराम की हयाते बरज़ख़िया में क्या फ़र्क़ है।

इरशाद : अंबिया किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की हयाते हक़ीक़ी हिस्सी दुनियावी है उन पर तस्दीक़ वादा इलाहिया के लिए महज़ एक आन को मौत तारी होती है फिर फौरन उनको वैसे ही हयात अता फरमा दी जाती है इस हयात पर वही अहकाम दुनयवीया हैं उनका तरका बांटा न जाएगा उनकी अज़्वाज को निकाह हराम नीज़ अज़्वाजे मुतह्हरात पर इद्दत नहीं वह अपनी कुबूर में खाते पीते नमाज़ पढ़ते हैं बल्कि सैयदी मुहम्मद बिन अब्दुल-बाक़ी ज़रक़ानी फरमाते हैं कि अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की कुबूर मुतह्हरा में अज़्वाजे मुतह्हरात पेश की जाती हैं वह उनके साथ शब बाशी फरमाते हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तो उनको हज करते हुए लब्बैक पुकारते हुए नमाज़ पढ़ते हुए देखा और औलिया उलमा शुहदा की हयाते बरज़ख़िया अगरचे हयाते दुनियवीया से अफ़ज़ल, आला है मगर उस पर अहकामे दुनयवीया जारी नहीं उनका तरेका तक़्सीम होगा उनकी अज़्वाज इद्दत करेंगी और हयाते बरज़ख़ीया का सुबूत तो अवाम के लिए भी है हदीस में है मिस्ल मोमिन की उस ताइर की तरह जो क़फ़स में है कि जब तक वह क़फ़स में है उसकी उड़ान उसी तक है और जब उस से आज़ाद हुआ तो उसकी उड़ान कितनी होगी बाद मरने के समआ, बसर और इद्राक आम लोगों का, यहां तक कि कुफ़्फ़ार का ज़ाइद हो जाता है और यह तमाम अह्ले सुन्नत व जमाअत का इज्माई अक़ीदा है और अहादीसे सहीहा से साबित है जो ख़िलाफ़ करे गुमराह है कि जिस किसी की क़ब्र पर आदमी जाता है अगर साहिबे क़ब्र उसको पहचानता था तो उसको पहचानता है और उस से तसल्ली पाता है उसकी आवाज़ बल्कि उसकी पैछल सुनता है और अगर नहीं पहचानता था तो इतना ज़रूर जानता है कि एक मुसलमान मेरी क़ब्र पर आया है

••

अर्ज़ : ऐसी अलमारी जो छत से लगी हुई है उसके ऊपर के दर्जे में

••

OK

कुरआन शरीफ़ रखा है अब उसकी तरफ़ पैर करके सो सकता है या नहीं।

इरशाद : जब पांव के महाज़ात से बहुत बुलन्द है तो हरज नहीं।

अर्ज़ : अंग्रेज़ी दवाइयाँ जाइज़ हैं या नहीं।

इरशाद : उनके यहां की जिस क़द्र रक़ीक़ दवाएं हैं सब में उमूमन

शराब होती है सब नजिस व हराम हैं।

अलैह ने लिखा है एक आलिम साहब की वफ़ात हुई उन को किसी ने ख़्वाब में देखा पूछा आपके साथ क्या मुआमला हुआ फरमाया जन्नत

अता की गई न इल्म के सबब बल्कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ इस निस्बत के सबब जो कुत्ते को राई के साथ होती है कि हर वक़्त भोंक-भोंक कर भेड़ों को भेड़िए से होशियार करता रहता है मानें न मानें यह उनका काम सरकार ने फरमाया कि भोंके जाओ बस इस क़द्र निस्बत काफी है। लाख रियाजते लाख मुजाहिदे

अता की गई न इल्म के सबब बल्कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ इस निस्बत के सबब जो कुत्ते को राई के साथ होती है कि हर वक्त भोंक-भोंक कर भेड़ों को भेड़िए से होशियार करता रहता है मानें न मानें यह उनका काम सरकार ने फरमाया कि भोंके जाओ बस इस क़द्र निस्बत काफी है। लाख रियाजते लाख मुजाहिदे इस निस्बत पर कुरबान जिस को यह निस्बत हासिल है उसको किसी मुजाहिदे किसी रियाज़त की ज़रूरत नहीं (फिर फरमाया) और उसी में रियाज़त किया थोड़ी है जो शख़्स उज़्लत नशीन हो गया न उसके क़ल्ब को कोई तक्लीफ़ पहुंच सकती है न उसकी आंखों को न उसके कानों को। उस से कहिए जिसने ओखली में सर दिया है और चारों तरफ़ से मूसल की मार पड़ रही है कई हज़ार की तादाद में वह लोग होंगे जिन्होंने न मुझ को कभी देखा न मैंने कभी उनको देखा और रोज़ाना सुबह उठ कर पहले मुझे कोस्ते होंगे फिर और काम करते होंगे और बहम्दुलिल्लाह तआला लाखों की तादाद में वह लोग भी निकलेंगे जिन्होंने न मुझ को देखा और न मैंने उनको देखा और रोज़ाना सुबह उठ कर नमाज़ के बाद मेरे लिए दुआ करते होंगे (फिर फरमाया) गालियां जो छापते हैं अख़्बारों में और इश्तेहारों में वह अख़बार व इश्तेहार तो रद्दी में जल कर ख़ाकिस्तर हो जाते हैं लेकिन वह चुटकियां जो उनके दिलों में ली गई हैं वह क़ब्रों में साथ जाएंगी और इन्शाअल्लाह तआला हश्र में रुस्वा करेंगी सिद्दीक़ व फारूक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा के विसाल को तेरह सौ बरस से ज़ाइद हुए उस वक्त तक तबरे से उन्हें नजात नहीं यह क्यों। इसलिए कि ग़ाशिया उठाया हक़ का अपने कन्धों पर और दूर मिटाया अह्ले बातिल का अल्लाह रहमत करे उमर पर कि हक़ गोई ने उसे ऐसा कर दिया कि उसका कोई दोस्त न रहा।

अर्ज़ : यह दुआ करना कि अल्लाह वहाबियों को हिदायत करे जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : वहाबिया के लिए दुआ फुज़ूल है *सुम्मा ला यऊदूना* उनके लिए आ चुका है वहाबी कभी लौट कर न आएगा और जो हिदायत पा जाए वह वहाबी न था हो चला था कुफ़्फ़ार वहां जा कर कहेंगे हमें वापस दुनिया में भेज कि तुझ पर ईमान लाएं फरमाया है *वलौ रद्दुल-आदू लेमा*

नुहू *अन्हु*। अगर उन्हें फिर भेजा जाए तो वही करेंगे जिस से पहले मना किया गया था।

मुअल्लिफ़ : पंजशंबा के दिन बाद अस्र हस्बे मामूल ख़त बनाने के वास्ते हज्जाम हाज़िर हुआ उसके हाथों में बदबू थी नापसन्द फरमा कर धोने के लिए इरशाद फ़रमाया (फिर फरमाया) यह भी बेसब्री व ना शुक्री है सैयदना ईसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक मरतबा लोगों के साथ तशरीफ़ लिए जा रहे थे रास्ता में निहातय लतीफ़ खुशबू आई तमाम लोगों ने क़स्दन उसे सूंघा और आपने नाक बन्द कर ली आगे चल कर एक निहायत तेज़ बदबू आई सब ने नाक बन्द कर ली मगर आप खोले रहे लोगों ने सबब पूछा इरशाद फरमाया वह नेमत थी मैंने ख़ौफ़ किया कि शुक्रिया मैं उसका शुक्रिया अदा न कर सकूं और यह बला थी उस पर मैंने सब्र किया।

अर्ज़ : दाढ़ी चढ़ाना कैसा है।

इरशाद : निसई शरीफ़ में है। *मन अक़दा लेहयतुहू फ़ख़्बेरूहु अन्ना मुहम्मदन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बरीयुन मिन्हु*। जो शख़्स अपनी दाढ़ी चढ़ाए उसे ख़बर दे दो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उस से बेज़ार हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर मेरी आंखों की रौशनी बहुत कम है। OK

इरशाद : आयतुल-कुर्सी शरीफ़ याद कर लीजिए हर नमाज़ के बाद एक बार पढ़िए नमाज़ पंजगाना की पाबन्दी रखिए और औरतें कि जिन दिनों में उन्हें नमाज़ का हुक्म नहीं वह भी पांचों वक़्त आयतुल-कुर्सी इस नीयत से कि अल्लाह की तारीफ़ है न उस नीयत से कि कलामुल्लाह है पढ़ लिया करें और जब उस कलिमा पर पहुंचें *वला युअद्दु हिफ़्ज़ुहुमा* दोनों हाथों की उंगलियां आंखों पर रख कर उस कलिमा को ग्यारह बार कहीं फिर दोनों हाथों की उंगलियों पर दम करके आंखों पर फेर लें।

नूर नूर नूर नूर नूर

सफेद चीनी की तशतरी पर उसे इसी तरह लिखें कि वाव और मीम के सर खुल रहें और अबे ज़मज़म शरीफ़ और न मिले तो आबे बारां और न मिले तो आबे ताज़ा से धो कर दो सौ छप्पन (२५६) बार उस पर *या नूर* पढ़ कर दम करें अव्वल व आख़िर तीन-तीन बार यह दरूद शरीफ़ *अल्लाहुम्मा नूर या नूर अन्नूर सल्ले अला नूरिका अल-मुनीर व आलेही व*

बारिक व सल्लिम। यह पानी आंखों पर लगाएं और बाक़ी पी लें।

३. ठलिया के तावीज़ों का चिल्ला करें (फिर फरमाया) सह अमल ऐसे क़वी अत्तासीर हैं कि अगर सिद्क़ एतक़ाद हो तो इन्शाअल्लाह तआला गई हुई आंखें वापस आ जाएं।

मुअल्लिफ़ : एक साहब ने पानी पी कर बचा हुआ फेंक दिया उस पर इरशाद फरमाया फेंकना न चाहिए किसी बर्तन में डाल देते उस वक़्त तो पानी इफ़रात से है उस एक घूंट पानी की क़द्र नहीं जंगल में जहाँ पानी न हो वहां उसकी क़द्र मालूम हो सकती है कि अगर एक घूंट पानी मिल जाए तो एक इंसान की जान बच जाए। हज़रत ख़लीफ़ा हारून रशीद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि उलमा दोस्त थे दरबार में उलमा का मज्मा हर वक़्त रहता था। एक मरतबा पानी पीने के वास्ते मंगाया मुंह तक ले गये थे पीना चाहते थे कि एक आलिम साहब ने फरमाया अमीरुल-मुमिनीन ज़रा ठहरिए मैं एक बात पूछना चाहता हूं फौरन ख़लीफ़ा ने हाथ रोक लिया उन्होंने फरमाया अगर आप जंगल में हों और पानी मयस्सर न हो और प्यास की शिद्दत हो इतना पानी किस क़द्र क़ीमत देकर ख़रीदेंगे फरमाया वल्लाह आधी सलतनत देकर फरमाया बस पी लीजिए जब ख़लीफ़ा ने पी लिया उन्होंने फरमाया अब अगर यह पानी निकलना चाहे और न निकल सके तो किस क़द्र क़ीमत देकर उसका निकलना मोल ले लेंगे वल्लाह पूरी सलतनत देकर। इरशाद फरमाया बस आपकी सलतनत की यह हक़ीक़त है कि एक मरतबा एक चुल्लू पानी पर आधी बिक जाए और दूसरी बार पूरी उस पर जितना चाहे तकब्बुर कर लीजिए।

OK

अर्ज़ : सब्ज़ रंग का जूता पहनना कैसा है।

इरशाद : जाइज़ है।

अर्ज़ : हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शक्ल मुबारक शक्ले अक़्दस से मिलती थी या नहीं।

इरशाद : नहीं।

अर्ज़ : फिर उस शेअ्र का क्या मतलब है।

नक़्शए शाहे मदीना साफ आता है नज़र
जब तसव्वुर में जमाते हैं सरापा ग़ौस का

इरशाद : उसके यह मानी हैं कि जमाले ग़ौसियत आईना है जमाले

अक़्दस का उस में वह शबीह मुबारक दिखाई देगी। (फिर फरमाया) इमाम हुसन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की शक्ले मुबारक सर से सीना तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशाबेह थी और इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की सीने से नाखुन पा तक और हज़रत इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु सर से पांव तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुशाबेह होंगे एक सहाबी हज़रत आबिस इब्ने रबीआ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की OK शबाहत कुछ कुछ सरकार से मिलती थी जब वह तशरीफ़ लाते हज़रत अमीर मुआविया रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु तख़्त से सरोक़द खड़े हो जाते (फिर फरमाया) और यह तो ज़ाहिरी शबाहत है वरना फिल-हक़ीक़त वह ज़ाते अक़्दस तो शबीह से मुनज़्ज़ह पाक बनाई गई है कोई उनके फज़ाइल में शरीक नहीं इमाम मुहम्मद बूसेरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह क़सीदा बुर्दा शरीफ़ में अर्ज़ करते हैं।

मुनज़्ज़ह अन शरीक फ़ी महासिनहू
फजौहर अल-हसन फीह ग़ैर मुन्क़सिम

हुज़ूर अपने तमाम फ़ज़ाइल व महासिन में शरीक से पाक हैं जौहर हुस्न आप में ग़ैर मुन्क़सिम है अह्ले सुन्नत की इस्तेलाह में जौहर उस जुज़ को कहते हैं जिसकी तक़्सीम मुहाल हो यानी हुज़ूर के हुस्न में से किसी को हिस्सा नहीं मिला।

अर्ज़ : जुमा पढ़ाना किस का हक़ है।

इरशाद : सुल्ताने इस्लाम या उसके नायब या उसके माज़ून का।

अर्ज़ : जहां सुल्ताने इस्लाम न हो वहां क्या आलिमे दीन उसका क़ायम मक़ाम माना जाएगा।

इरशाद : हां आलिमे दीन ही सुल्तान इस्लाम है वह हो या उसका नाइब या उसका माज़ून।

अर्ज़ : बजाए अत्तहीयात के अल्हम्दु शरीफ़ पढ़ गया अब क्या करे।

इरशाद : सिवाए क़्याम के तिलावते कुरआन न रुकूअ् में जाइज़ है न सुजूद में न क़अ्दा में भूल कर पढ़ गया तो सज्दा सह्व करे।

अर्ज़ : जिस तरह ईमान का तअल्लुक़ क़ल्ब से है कि बेग़ैर तस्दीक़े क़ल्बी ज़बानी कलिमा गोई कारआमद नहीं इसी तरह सिर्फ़ कुफ़्र बकने से भी कुफ़्र न होना चाहिए जब तक कि दिल से उसका इक़रार न करे।

इरशाद : मुस्तहब यह है कि फिर वुज़ू कर ले अगर नमाज़ उसी वुज़ू से पढ़ ली ख़िलाफ़े मुस्तहब किया।

अर्ज़ : अगर दवा में अफ़्यून इस क़द्र पड़ी हो कि नशा न लाए तो जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : हां अगर ऐसी सूरत हो कि उसका कोई असर वाक़े न होता हो और उसकी आदत न पड़े और आइन्दा भी कोई बात ज़ाहिर न हो तो जाइज़ है।

अर्ज़ : हदीस शरीफ़ में आया है। इन्नी हर्रम्तु कुल्लु मस्करिन व मुफ़्तरिन। और अफ़्यून मुफ़्तर है तो चाहिए कि हराम हो।

इरशाद : हां अगर हद तफ़्तीर को पहुंचेगी तो हराम है।

अर्ज़ : तो हुज़ूर शराब का भी जब तक हद उसका रुकू न पहुंचे यही हुक्म होना चाहिए।

इरशाद : वह तो हराम। लईना है मिस्ल पेशाब के नजिस है अपनी नजासत के सबब हराम है न उसका रुके सबब अगर एक क़तरा कुएं में पड़ जाए सारा कुआं नजिस हो जाएगा।

अर्ज़ : इमाम ज़ामिन का जो पैसा बांधा जाता है उसकी कोई असल है।

OK

इरशाद : कुछ नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर यह किसी साहब का लक़ब है।

इरशाद : हां इमाम अली रज़ा का रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु।

अर्ज़ : अगर मिट्टी आंखों में पड़ जाए और पानी निकले तो नाक़िज़ वुज़ू है या नहीं।

इरशाद : यह वह पानी नहीं जिस से वुज़ू टूटे हां दुखती आंख से अगर पानी निकले नाक़िज़े वुज़ू है।

अर्ज़ : हुज़ूर यह मशहूर है। *अल-वलायतु अफ़ज़ल मिनन्नुबुव्वते*।

इरशाद : यूं नहीं बल्कि यूं है। *वेलायतुन्नबी अफ़ज़लु मिन नुबुव्वतेही*। नबी की विलायत उसकी नुबुव्वत से अफ़ज़ल है कि विलायत की तवज्जोह इल्लल्लाह है और नुबुव्वत की तवज्जोह इलल-मख़्लूक़ है।

अर्ज़ : हुज़ूर वली की विलायत भी मुतवज्जेह इलल्लाह होती है।

इरशाद : हां मगर उसकी तवज्जोह इल्लल्लाह नबी की तवज्जोह इलल-ख़ल्क़ के करोड़वीं हिस्सा को नहीं पहुंचती।

अर्ज़ : हुज़ूर बुज़ुर्गाने दीन के एरास की तऐयुन में भी कोई मस्लहत है।

इरशाद : हां औलियाए किराम की अरवाहे तैयबा को उनके विसाल शरीफ़ के दिन कुबूर करीमा की तरफ़ तवज्जोह ज़्यादती होती है चुनांचे वह वक़्त जो ख़ास विसाल का है अख़ज़ बरकात के लिए ज़्यादा मुनासिब होता है।

अर्ज़ : हुज़ूर बुज़ुर्गाने दीन के एरास में जो अफ़आल नाजाइज़ होते हैं उन से उन हज़रात को तक्लीफ़ होती है।

इरशाद : बिला शुबह और यही वजह है कि उन हज़रात ने भी तवज्जोह कम फ़रमा दी वरना पहले जिस क़द्र फ़्यूज़ होते थे वह अब कहां।

अर्ज़ : यह हुक्म जो फ़रमाया गया है कि मज़ार शरीफ़ पर पायती की तरफ़ से हाज़िर हो वरना साहिबे क़ब्र को सर उठा कर देखना पड़ेगा तो क्या आलमे बरज़ख़ में भी औलियाए किराम को सर उठाने की ज़रूरत पड़ती है।

इरशाद : हां अवाम को बल्कि आम्मा औलियाए किराम को भी उसकी ज़रूरत है और यह तो शाने नुबुव्वत में से है कि आगे पीछे यक्सां देखना बाज़ सहाब-ए-किराम ने जो नए मुसलमान हुए थे नमाज़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर सबक़त की बाद नमाज़ के हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम देखते हो कि मेरा मुंह क़िबला को है मैं ऐसा ही अपने पीछे देखता हूं जैसा आगे।

मुअल्लिफ़ : हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के तज़्किरा पर फरमाया कि हज़रत ख़्वाजा के मज़ार से बहुत कुछ फ़्यूज़ व बरकात हासिल होते हैं। मौलाना बरकात अहमद साहब मरहूम जो मेरे पीर भाई और मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाह तआला अलैह के शागिर्द थे उन्होंने मुझ से बयान किया कि मैंने अपनी आंखों से देखा कि एक हिन्दू जिसके सर से पैर तक फोड़े थे अल्लाह ही जानता है कि किस क़द्र थे ठीक दोपहर को आता और दरगाह शरीफ़ के सामने गर्म कंकरों और पत्थरों पर लोटता और कहता ख़्वाजा उगन लगी है तीसरे रोज़ मैंने देखा कि बिल्कुल अच्छा हो गया (फिर फ़रमाया) भागलपुर से एक साहब हर साल अजमेर शरीफ़ हाज़िर हुआ करते एक वहाबी रईस

है या नहीं।

इरशाद : हां कर सकता है मुहताजों को छुपा कर दे यह जो आम रिवाज है कि खाना पकाया जाता है और तमाम अग़्निया व बिरादरी की दावत होती है ऐसा न करना चाहिए (फिर फरमाया) छुपा कर देना मुहताजों को आला व अफ़ज़ल है हदीस में इरशाद फरमाया : *सदक़तुस्सिर्रे तदफ़ओ मैततुस्सूआ व ततफ़ई ग़ज़बर्रब्बे*। छुपा कर सदक़ा देना बुरी मौत से बचाता है और रब्बुल-इज़्ज़त जल्ला जलालुहू के ग़ज़ब को ठण्डा करता है (फिर फ़रमाया) ज़िन्दगी में अपने वास्ते सदक़ा करना बाद मौत के सदक़ा से अफ़ज़ल है हदीस में इरशाद फरमाया।

अफ़ज़ल सदक़ा यह है कि तू तस्दीक़ करे इस हाल में कि तू तन्दुरुस्त हो और माल पर हरीस, ख़्वाहिशमन्द से दौलत की तमन्ना रखता हो और मुहताजी से डरता हो यह न हो कि जब दम गले में अटके उस वक़्त कहे कि फुलां को इतना फुलां को इतना कि अब तो फुलां के लिए हो ही चुका।

अर्ज़ : हुक्म यह है कि क़ब्र की पाएती से हाज़िर हो क़ब्रिस्तान में जब कि कुबूर का इख़्तिलात है क्योंकर होगा।

इरशाद : सब से पहले क़ब्रिस्तान की पाएती जानिब से आए और उसी पाएती किनारे पर खड़ा हो कर सलाम कहे और जो कुछ चाहे आम ईसाले सवाब करे किसी को सर उठाने की हाजत न होगी और अगर किसी ख़ास के पास जाना है तो ऐसे रास्ता से जाए जो उस क़ब्र की पाएती जानिब को आया हो बशर्ते कि कोई क़ब्र दर्मियान में न पड़े वरना जाइज़ होगा फुक़हाए किराम फरमाते हैं ज़ियारत के वास्ते क़ब्रों को फांद कर जाना हराम है।

अर्ज़ : हुज़ूर यह हुक्म है कि क़ब्रिस्तान में अगर दफन करने जाए तो जूते उतार ले और अह्ले कुबूर के वास्ते इस्तिग़फ़ार करता चले अगर रास्ता में बबूल के कांटे वग़ैरह पड़े हों तो क्या करे।

इरशाद : शरीअते मुतह्हरा का आम क़ायदा है कि किसी काम को मना फरमाती है किसी मसलहत से और जब बन्दा को ज़रूरत पेश आ जाती है फौरन अपनी मुमानेअत उठा लेती है खुमर व ख़िंज़ीर से बढ़ कर कौन सी चीज़ हराम फरमाइ गई मगर साथ ही मुज़्तर का इस्तिसना फरमा दिया जंगल में है प्यास की शिद्दत है शराब मौजूद है

दो जिस पिस्तान का हिला हुआ है उसी से दूध पिएगा दूसरे को नहीं चाहता (फिर फरमाया) अपने तमाम हवाइज में अपने शैख़ ही की तरफ़ रुजूअ् करे।

अर्ज़ : इस हदीस के क्या मानी हैं : *लौ काना मूसा हैयन मा वसअहू इल्ला इत्तिबाई।*

OK

इरशाद : अगर मूसा तशरीफ़ लाएं और तुम मुझे छोड़ कर उनका इत्तिबा करो गुम्राह हो जाओगे हालांकि नबी-नबी में बहैसियत नुबुव्वत के कुछ फ़र्क़ नहीं वजह यह हे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नासिख़ जमीअ् अदयाने साबेक़ा हैं। बहुत अहकामे शरीअत मौसवी और शरीअते ईसवी के हमारी शरीअत में मन्सूख़ हुए तो अगर उन अहकाम को छोड़ कर उनकी पैरवी की जाए यक़ीनन गुमराही है अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु और चन्द यहूद मुशर्रफ़ बाइस्लाम हुए और नमाज़ में तौरेत शरीफ़ भी पढ़ने की इजाज़त चाही आयते करीमा नाज़िल हुई।

ऐ मुसलमानो! अगर मुसलमान होते हो तो पूरे मुसलमान हो जाओ शैतान के फरेब में न पड़ो बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

अर्ज़ : शैख़ के हुज़ूर चिपका रहना अफ़ज़ल है या नहीं।

इरशाद : बेकार बातों से तो हर वक़्त परहेज़ चाहिए और शैख़ के हुज़ूर ख़ामोश रहना अफ़ज़ल है ज़रूरी मसाइल पूछने में हरज नहीं औलियाए किराम फरमाते हैं शैख़ के हुज़ूर बैठ कर ज़िक्र भी न करे कि ज़िक्र में दूसरी तरफ़ मशग़ूल होगा और यह हक़ीक़तन मुमानअते ज़िक्र नहीं बल्कि तक्मीले ज़िक्र है कि वह जो करेगा बिला तवस्सुल होगा और शैख़ की तवज्जोह से जो ज़िक्र होगा वह बतवस्सुत होगा यह उस से बदरजहा अफ़ज़ल है (फिर फरमाया) असल कार हुस्ने अक़ीदत है यह नहीं तो कुछ नफ़ा नहीं और सिर्फ़ हुस्ने अक़ीदत है तो ख़ैर इत्तिसाल तो है (फिर फरमाया) परनाला कि मिस्ल तुम को फ़ैज़ पहुंचेगा। हुस्ने अक़ीदत होना चाहिए।

अर्ज़ : हुज़ूर क्या यह सही है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफ़ाते अक़्दस के वक़्त मौला अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया सब्र बेहतर है मगर आप पर और रोना बुरा है मगर आप पर।

इरशाद : यह अल्फाज़ नज़र से न गुज़रे बहुत मुम्किन है कि ऐसा हुआ हो।

अर्ज़ : अगर उसको सही माना जाए तो उसके क्या मानी होंगे।

इरशाद : मानी ज़ाहिर हैं सब्र होता है मुतनाही रंज पर और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जुदाई का रंज हर मुसलमान को ग़ैर मुतनाही है तो ग़ैर मुतनाही पर सब्र क्योंकर होगा।

अर्ज़ : लेकिन हमारे उलमाए किराम ग़म ताज़ा करने को हराम फरमाते हैं।

इरशाद : ग़म ताज़ा करना अपनी तरफ से होता है और यहां जो रंज है वह अपने अख़्तियार में नहीं।

अर्ज़ : तो अगर बेअख़्तियारी में अपने अज़ीज़ की मौत पर सब्र न करे तो जाइज़ होगा।

इरशाद : बेअख़्तियारी बना लेते हैं वरना अगर तबीअत को रोका जाए तो यक़ीन है कि सब्र हो सकता है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लिए जा रहे थे राह में मुलाहिज़ा फरमाया कि एक औरत अपने लड़के की मौत पर नौहा कर रही है हुज़ूर ने मना फरमाया और इरशाद फरमाया सब्र कर, वह अपने हाल में ऐसी बेख़बर थी कि उसको न मालूम हुआ कि कौन फरमा रहे हैं जवाब बेहूदा दिया कि आप तशरीफ़ ले जाएं मुझे मेरे हाल पर छोड़ें हुज़ूर तशरीफ़ ले गये बाद को लोगों ने उस से कहा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फरमाया था वह घबराई और फौरन दरबार में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मुझे मालूम न हुआ कि हुज़ूर मना फरमा रहे हैं अब मैं सब्र करती हूं इरशाद फरमाया *अस्सबरु इन्दा अस्सदमतिल-ऊला।* सब्र पहली ही बार करती तो सवाब मिलता फिर तो सब्र आ ही जाता है इस से मालूम हुआ कि अगर आदमी सब्र करे तो हो सकता है इमाम मुहम्मद बूसेरी रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं नफ़्स बच्चा की मिस्ल है कि अगर उसको दूध पिलाए जाओ जवान हो जाएगा और पीता रहेगा और अगर छुड़ा दो छोड़ देगा मैंने खुद देखा गांव में एक लड़की १८ या २० बरस की थी मां उसकी ज़ईफ़ा थी उसका दूध उस वक़्त तक न छुड़ाया था मां हर चन्द मना करती वह ज़ोर आवर थी पिछाड़ती और सीने पर चढ़ कर दूध पीने लगती।

इरशाद : यह अल्फाज़ नज़र से न गुज़रे बहुत मुम्किन है कि ऐसा हुआ हो।

अर्ज़ : अगर उसको सही माना जाए तो उसके क्या मानी होंगे।

इरशाद : मानी ज़ाहिर हैं सब्र होता है मुतनाही रंज पर और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जुदाई का रंज हर मुसलमान को ग़ैर मुतनाही है तो ग़ैर मुतनाही पर सब्र क्योंकर होगा।

अर्ज़ : लेकिन हमारे उलमाए किराम ग़म ताज़ा करने को हराम फरमाते हैं।

इरशाद : ग़म ताज़ा करना अपनी तरफ से होता है और यहां जो रंज है वह अपने अख़्तियार में नहीं।

अर्ज़ : तो अगर बेअख़्तियारी में अपने अज़ीज़ की मौत पर सब्र न करे तो जाइज़ होगा।

OK इरशाद : बेअख़्तियारी बना लेते हैं वरना अगर तबीअत को रोका जाए तो यक़ीन है कि सब्र हो सकता है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लिए जा रहे थे राह में मुलाहिज़ा फरमाया कि एक औरत अपने लड़के की मौत पर नौहा कर रही है हुज़ूर ने मना फरमाया और इरशाद फरमाया सब्र कर, वह अपने हाल में ऐसी बेख़बर थी कि उसको न मालूम हुआ कि कौन फरमा रहे हैं जवाब बेहूदा दिया कि आप तशरीफ़ ले जाएं मुझे मेरे हाल पर छोड़ें हुज़ूर तशरीफ़ ले गये बाद को लोगों ने उस से कहा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फरमाया था वह घबराई और फौरन दरबार में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मुझे मालूम न हुआ कि हुज़ूर मना फरमा रहे हैं अब मैं सब्र करती हूं इरशाद फरमाया *अस्सबरु इन्दा अस्सदमतिल-ऊला।* सब्र पहली ही बार करती तो सवाब मिलता फिर तो सब्र आ ही जाता है इस से मालूम हुआ कि अगर आदमी सब्र करे तो हो सकता है इमाम मुहम्मद बूसेरी रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाते हैं नफ़्स बच्चा की मिस्ल है कि अगर उसको दूध पिलाए जाओ जवान हो जाएगा और पीता रहेगा और अगर छुड़ा दो छोड़ देगा मैंने खुद देखा गांव में एक लड़की १८ या २० बरस की थी मां उसकी ज़ईफ़ा थी उसका दूध उस वक़्त तक न छुड़ाया था मां हर चन्द मना करती वह ज़ोर आवर थी पिछाड़ती और सीने पर चढ़ कर दूध पीने लगती।

अर्ज़ : ख़िलाफ़ते राशिदा किस-किस की ख़िलाफ़त थी।

OK

इरशाद : अबू बकर सिद्दीक़, उमर फारूक़, उस्मान ग़नी, मौला अली, इमाम हसन, अमीर मुआविया, उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ रज़ि अल्लाुह तआला अन्हुम की ख़िलाफ़ते राशिदा थी और अब सैयदना इमाम मेहदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त ख़िलाफ़ते राशिदा होगी।

पर अल्लाह और तमाम फ़रिश्तों और तमाम आदमियों की लानत अल्लाह न उसका फ़र्ज़ क़बूल करेगा न नफ़्ल दूसरी हदीस में इरशाद हुआ। *फ़ल-जन्नतु अलैहि हरामुन*। तीसरी हदीस में फरमाया। *फ़अलैहि लानतुल्लाहि मुततबिअतुन इला यौमिल-क़्यामते* उस पर अल्लाह की पै-दर-पै क़्यामत तक लानत है।

अर्ज़ : अय्यामे बैज़ में रोज़ा रखने से महीना भर का सवाब मिलता है।

इरशाद : हां पहली, दूसरी, तीसरी, चौदा, पन्द्रह या सत्ताईस, अट्ठाईस, उन्तीस उन में से जिस में रोज़ा रखे सब का सवाब बराबर है। पहली दूसरी तीसरी लयाली हिलाल और तेरह चौदह पन्द्रह लयाली बीज़ (सफ़ेद रातें) और सत्ताइस अट्ठाइस उन्तीस लयाली सूद (सियाह)

अर्ज़ : हुज़ूर एक रिवायत है कि बनी इसराईल में एक शख़्स दो सौ बरस तक फ़िस्क़ व फुजूर में मुब्तला रहा और बाद इंतिक़ाल उसकी मग़्फ़िरत फरमा दी गई इस वजह से कि उस ने तौरेत शरीफ़ में नाम पाक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का देख कर चूम लिया था।

इरशाद : हां सही है उनका नाम मस्तह था फिर फरमाया उसके करम की कोई इंतिहा नहीं उसकी रहमत चाहे तो करोड़ों बरस क गुनाह धो दे गुलामी होना चाहिए सरकार की, एक नेकी से मुआफ़ फरमा दे बल्कि उन गुनाहों को नेकियों से बदल दे और अगर अदल फरमाए तो करोड़ों बरस की नेकियां एक सग़ीरा के एवज़ रद्द फरमा दे हदीस में इरशाद हुआ कोई शख़्स बेग़ैर अल्लाह की रहमत के अपने आमाल से जन्नत में नहीं जा सकता सहाबा ने अर्ज़ की *वला अन्ता या रसूलुल्लाह*। आप भी नहीं या रसूलुल्लाह इरशाद फ़रमाया *वला अना इल्ला अन यतग़म्मदनी रहमतुन*। और मैं भी जब तक कि मेरा रब रहमत न फरमाए गुनाह न सही इस्तेहक़ाक़ किस बात का है दुनिया ही का क़ायदा देखिए अगर अजीर है मज़्दूरी करेगा उजरत पाएगा और अगर अब्द है मम्लूक है कितनी ही ख़िदमत करे कुछ न पाएगा हम सब तो उसी की मख़्लूक़ व मम्लूक हैं उसकी रहमत ही रहमत है आप ही बन्दों को तौफ़ीक़ दी आप ही उनको अस्बाब दिए आप ही आसान फरमाया और फरमाता है बदला है उनके नेक अमलों का नेअ्मल-अब्द

इरशाद : अगर वह करना चाहे तो जाइज़ है इब्तिदा न चाहिए।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर फासिके मुअ्लिन हो।

इरशाद : अगरचे मुअ्लिन हो मुब्तअ् से न चाहिए।

अर्ज़ : ज़ैद ने एक शख़्स को पोशीदगी में गुनाह करते देखा अब यह उसके पीछे इक़्तिदा कर सकता है या नहीं।

इरशाद : कर सकता है यह अपने को देखे अगर उस ने कभी कोई गुनाह न किया हो तो न पढ़े हदीस में है। *तरल-कुज़ातु फ़ी ऐने अख़ीका वला तरा अल-जज़्ए फ़ी ऐनेका* (हां फासिक़ मुअ्लिन के पीछे नमाज़ पढ़ना गुनाह है)

अर्ज़ : क़ब्र का ऊंचा बनाना कैसा है। OK

इरशाद : ख़िलाफ़े सुन्नत है मेरे वालिद माजिद मेरी वालिदा माजिदा मेरे भाई की क़ब्रें देखिए एक बालिश्त से ऊंची न होंगी।

अर्ज़ : अगर जेब में कोई लिखा हुआ काग़ज़ हो तो बैतुल-ख़ला जा सकता है। या नहीं

इरशाद : छुपाया हुआ है जा सकता है और एहतियात यह है कि इलाहिदा कर दे।

अर्ज़ : तमग़े जो स्कूलों में मिलते हैं उन पर चेहरा बना होता है उसको लगा कर नमाज़ हो सकती है या नहीं।

इरशाद : होगी मगर मक्रूहे तहरीमी है।

अर्ज़ : हुज़ूर इमाम अबू हनीफ़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु को अबू हनीफ़ा क्यों कहते हैं।

इरशाद : हनीफ़ औराक़ को कहते हैं हुज़ूर को इब्तिदा ही से लिखने का बहुत शौक़ था।

अर्ज़ : अगर बीच दरिया में कश्ती खड़ी हो तो उस पर नमाज़ हो जाएगी या नहीं।

इरशाद : अगर उतर नहीं सकता तो हो जाएगी वरना नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर कश्ती तो मुस्तक़िर है।

से ख़ौफ़ करती हैं। और तू ख़ुदा से नहीं डरता उसी वक़्त ताइब हुए और घर को लौट आए शब को सोए, ख़्वाब में ज़्यारते अक़्दस से मुशर्रफ़ हुए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु भी थे आपने अर्ज़ किया बैअत लीजिए इरशाद फरमाया तुझ से तेरा हम नाम बैअत लेगा अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने बैअत ली और अपनी कुलाह मुबारक उनके सर पर रखी आंख खुली तो कुलाहे अक़्दस मौजूद थी यह सिलसिला हवारिया आप से शुरू हुआ।

अर्ज़ : अरब के साथ मुहब्बत रखने का हुक्म हदीस में है।

इरशाद : हां। हदीस में है। OK

अर्ज़ : अरबी ज़बान मरने के वक़्त से हो जाती है।

इरशाद : उसकी बाबत तो कुछ हदीस में इरशाद नहीं हुआ हज़रत सैयदी अब्दुल-अज़ीज़ दबाग़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु साहिबे किताब इब्रीज़ के शैख़ फरमाते हैं मुंकर नकीर का सवाल सुरयानी में होगा और कुछ लफ़्ज़ भी बताए हैं।

अर्ज़ : इबरानी और सुरयानी एक ही हैं।

इरशाद : इबरानी और है और सुरयानी और इबरानी में इंजील नाज़िल हुई और सुरयानी में तौरेत है।

अर्ज़ : हुज़ूर मुतकल्लेमीन जो ज़मां व मकां को बाद व इम्तिदाद मौहूम कहते हैं उसके क्या मानी।

इरशाद : ख़ारिज में उनका वजूद नहीं वहम हुक्म करता है लेकिन उनका वजूद ईन्याब इग़वाल के मिस्ल नहीं अस्लियत है।

अर्ज़ : हुज़ूर ख़ला मुम्किन है।

इरशाद : ख़ला मानी फ़िज़ा तो वाके़ है और ख़ला बमानी फ़िज़ा ख़ाली अन जमीअ् अल-अशिया मौजूद तो नहीं लेकिन मुम्किन है फलासफ़ा जितनी दलीलें बयान करते हैं। *जुज़ ला यतजज़्ज़ा* और ख़ला वग़ैरह के इस्तिहाला में वह सब मरदूद हैं कोई दलील फ़लासफ़ा की ऐसी नहीं जो टूट न सके फ़लासफ़ा ने जितनी दलीलें क़ायम की हैं वह सब इत्तिसाल अज्ज़ा को बातिल करती हैं। वजूद जुज़ को बातिल नहीं

मतलब है वह यक़ीनन कुफ़्र है।

अर्ज़ : हुज़ूर यह मशहूर है कि जिस मुबाह को कुफ़्फ़ार मना करें वाजिब हो जाता है।

इरशाद : जिस मुबाह के तर्क में मुसलमानों के लिए ज़िल्लत हो वह वाजिब हो जाता है कि मुसलमानों को ज़िल्लत पहुंचाना हराम तो जिस अम्र में मुसलमानों को ज़िल्लत पहुंचे उसका तर्क वाजिब है।

अर्ज़ : फतावा आलमगीरिया किस की तस्नीफ़ है।

इरशाद : मौलाना निज़ामुद्दीन साहब जो मज्मा उलमा के सरदार थे उनकी तस्नीफ़ है।

अर्ज़ : हुज़ूर फिर उसको आलमगीरिया क्यों कहते हैं। OK

इरशाद : सुल्तान आलमगीर रहमतुल्लाह अलैह ने उलमा को जमा करके तस्नीफ़ कराई और उस में कई लाख रुपया सर्फ़ किया कसीर कुतुबख़ाना जमा किया तमाम किताबों में देख-देख कर यह फतावा तस्नीफ़ हुआ।

अर्ज़ : मुनाज़रा में यह शर्त करना कि जो मग़लूब हो ग़ालिब का मज़्हब अख़्तियार कर ले कैसा है। OK

इरशाद : हराम है और अगर दिल में यह है कि दूसरा ग़ालिब होगा तो वह शख़्स अपने मज़्हब को छोड़ देगा तो यह कुफ़्र है अइम्मा किराम की तस्रीह है कि जो शख़्स कुफ़्र का इरादा करे मुज़ाफ़न या मुअल्लक़न अभी काफिर हो गया मुज़ाफ़न यह कि मसलन इरादा करे बीस बरस बाद कुफ़्र करेगा तो अभी काफिर हो गया कि कुफ़्र पर राज़ी हुआ और मुअ़ल्लक़ की शक्ल यह है कि अगर वह काम हो जाए या न हो तो वह शख़्स कुफ़्र करेगा हां अगर दिल में यह है कि यक़ीनन मैं ही ग़ालिब आऊंगा तो कुफ़्र नहीं।

अर्ज़ : हुज़ूर अगर वहाबिया यह कहें कि बारी तआला के लिए ज़ुल्म इस वजह से मुहाल है कि ग़ैर मालिक मुस्तक़िल है ही नहीं तो बिज़्ज़ात मुहाल नहीं उसका क्या जवाब है।

इरशाद : यूं तो कोई शय मुहाल बिज़्ज़ात न रहे मुख़ालिफ़ पूछेगा यह क्यों मुहाल है जब उसकी वजह इस्तेहाला बताइएगा वह कह देगा

हर नाम उन में एक तसर्रुफ़ मख़्सूस रखता है जब अट्ठारह को एक हज़ार में ज़रब दी जाएगी अट्ठारह हज़ार होंगे बाज़ रिवायात से सी सद व शस्त हज़ार यानी त्रिसठ हज़ार पाए जाते हैं बाज़ सत्तर हज़ार बताते हैं बाज़ के नज़्दीक अट्ठारह आलम हैं अक़्लीया, रूहिया, नफ़्सिया, तबईया, जिस्मानिया, उन्सुरीया, मिसालिया, ख़्यालिया, बरज़ख़ीया, हश्रीया, जिन्नातिया, जहन्नमीया, एराफ़िया, रूवैतिया, सूरीया, जमालिया, जलालिया यह सत्तरह होते हैं यक़ीनन एक रह गया है वह इरशाद हो।

इरशाद : यह किसी का तख़ैयुल है और ग़ैर सही उसकी तक्मील क्या हो।

अर्ज़ : बरज़ुख़ की तारीफ़ तो यह है कि वह शय जो मुतवस्सित हो दर्मियान दो शय के जिसे दोनों से इलाक़ा हो सके, जब सिर्फ़ बरज़ख़ का लफ़्ज़ बोला जाता है तो उसका मफ़्हूम क़ब्र होता है सवाल यह है कि बरज़ख़ से मुराद क़ब्र है या वह ज़माना जो बाद मरने से क़्यामत या हश्र तक है।

OK

इरशाद : न क़ब्र न वह ज़माना बल्कि वह मक़ामात जिन में अरवाह बाद मौत हश्र तक हस्बे मरातिब रहती हैं।

अर्ज़ : क़्यामत और हश्र का फ़र्क़, क़्यामत वह है जिसमें सब मौजूदात फना किए जाएंगे और हश्र में फिर अज़ सरे नौ पैदा किए जाएंगे अगर बरज़ख़ का ज़मान क़्यामत है तो बाद क़्यामत हश्र के ज़माना का कोई नाम है या नहीं और क़्यामत के कितने अरसा के बाद हश्र होगा।

इरशाद : वह साअत है कभी उसे भी क़्यामत कहते हैं वरना क़्यामत व हश्र एक हैं साअत व हश्र के दर्मियान जो ज़माना है उसे *मा बैना अन्नफ़्ख़तैन* कहते हैं हश्र चालीस बरस बाद होगा।

अर्ज़ : दरजाते बरज़ख़ इल्लीयीन और सिज्जीन और उनके सिवा जो हों इरशाद हों।

इरशाद : इल्लीयीन और सिज्जीन बरज़ख़ ही के मक़ामात हैं और हर एक में हस्बे मरातिब तफ़ावुत बेशुमार।

अर्ज़ : दरजाते फ़िक्र तरतीब वार इरशाद हों कि जब तालिब सुलूक

की राह चलता है तो अव्वल कौन सा दरजा हासिल होता है फिर कौन सा।

इरशाद : सुलहा, सालिकीन, क़ानेबीन, वासेलीन अब उन वासिलों के मरातिब हैं नजबा, नुक़बा, अब्दाल, बदला, औताद, इमामैन, ग़ौस, सिद्दीक़, नबी, रसूल तीन पहले सैर इलल्लाह के हैं बाक़ी सैर फ़िल्लाह के और वली उन सब को शामिल।

अर्ज़ : अंबिया अलैहिमुस्लातु वस्सलाम के फुज़्लाते शरीफ़ा पाक हैं।

इरशाद : पाक हैं और उनके वालिदैन करीमैन के वह नुत्फ़े भी पाक हैं जिन से यह हज़रात पैदा हुए (फिर फरमाया) हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हमराह था हुज़ूर को क़ज़ाए हाजत की ज़रूरत हुई। दो मुतफ़र्रिक़ पेड़ अलग-अलग खड़े थे और कुछ पत्थर इधर उधर पड़े थे हुज़ूर ने इरशाद फरमाया ऐ जाबिर इन पेड़ों और पत्थरों से जा कर कह दो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हुक्म है कि तुम आपस में मिल जाओ हज़रत जाबिर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने जाकर फरमाया दोनों पेड़ों ने जुंबिश की और अपने तमाम रग व रेशा ज़मीन से निकाले एक इधर से चला और दूसरा उधर से और दोनों मिल गये और पत्थरों ने एक दीवार की मिस्ल हो कर उड़ना शुरू किया और दरख़्तों के पास आ कर खड़े हुए फिर हुज़ूर वहां तशरीफ़ ले गये और क़ज़ाए हाजत फरमाई जब फारिग़ हो कर तशरीफ़ लाए। मैं गया इस क़स्द से कि जो कुछ ख़ारिज हुआ हो उसको खाऊं वहां कुछ न था अल्बत्ता उस जगह मुश्क की खुशबू आ रही थी फरमाया उन पेड़ों और पत्थरों से कहो अपनी-अपनी जगह चले जाओ वह अपनी-अपनी जगह चले गये मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मैं इस नीयत से गया था कि जो कुछ मिले उसको तबर्रुकन खाऊं वहां सिवाए मुश्क की खुशबू के और कुछ न पाया फरमाया क्या तुम को मालूम नहीं कि ज़मीन निगल लेती है जो अंबिया से ख़ारिज होता है (फिर मुस्कुरा कर फरमाया) जो अच्छी चीज़ होती है उसको ज़मीन ही नहीं छोड़ती (फिर फरमाया) सब अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम ताहिर महज़ हैं

और जो शय उन से इलाक़ा रखने वाली है सब ताहिर हां उनके फ़ुज़्लात खुद उनके हक़ में ऐसे ही नजिस हैं जैसे हमारे नज़्दीक हमारे फ़ुज़्लात नजिस हैं और अगर उन से कोई फ़ुज़्ला ख़ारिज हो जो हमारे लिए नाक़िज़े वुज़ू है तो बेशक उनका वुज़ू भी टूट जाएगा। (फिर फरमाया) मेरी नज़र में इमाम इब्ने हजर अस्क़लानी शारेह सही बुख़ारी की उक़्अत इब्तिदाअन इमाम बदरुद्दीन महमूद ऐनी शारेह सही बुख़ारी से ज़्यादा थी फ़ुज़्लाते शरीफ़ा की तहारत की बहस उन दोनों साहिबों ने की है इमाम इब्ने हजर ने इब्हासे मुहद्दिसाना लिखी हैं कि यूं कहा जाता है और उस पर यह एतराज़ है यूं कहा जाता है और उस पर यह एतराज़ है अख़ीर में लिखा है कि फ़ुज़्लाते शरीफ़ा की तहारत उनके नज़्दीक साबित नहीं इमाम ऐनी ने भी शरह बुख़ारी में इस बहस को बहुत बसत से लिखा है आख़िर में लिखते हैं कि यह सब कुछ इबहास हैं जो शख़्स तहारत का क़ाइल हो उसको मैं मानता हूं और जो उसके ख़िलाफ़ कहे उसके लिए मेरे कान बहरे हैं मैं सुनता नहीं यह लफ़्ज़ उनकी कमाले मुहब्बत को साबित करता है और मेरे दिल में ऐसा असर कर गया कि उनकी उक़्अत बहुत हो गई।

अर्ज़ : अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम क आज़ाए शरीफ़ा मसलन मूए मुबारक और दन्दान शरीफ़ और नाखुन शरीफ़ का खाना जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : यह नाजाइज़ व हराम है इब्तिज़ाल व तौहीन है जो चीज़ हराम की गई उसकी हिल्लत की कोई वजह नहीं वह मुबाह नहीं हो सकती अगर चाहता है पानी में धो कर पिए।

अर्ज़ : की क़ैद कैसी है क्योंकि हर हलाल तैय्यिब है।

इरशाद : जो चीज़ हलाल हो और तैयब हो उसे खाओ यह मानी हैं (फिर फरमाया) हर तैयब हलाल है और हर हलाल तैयब नहीं जो चीज़ें मक्रूह हैं वह तैयबात से ख़ारिज हैं।

अर्ज़ : आदमियों की हड्डी तैयब है और हलाल नहीं।

इरशाद : ताहिर है तैयब नहीं ताहिर के मानी पाक के अगर नमाज़ में पास हो तो हरज नहीं और तैयब के माना पाक जाइज़ुल-इस्तेमाल जिस

में किसी जेहत से नुक़सान न हो, नाक़िस चीज़ को ख़बीस कहा जाता है ताहिर आम है हलाल उस से ख़ास है तैयब उस से भी ख़ास है।

अर्ज़ : क़ैदी लोग क़ैदख़ाना में जो अशिया बनाते हैं गवर्नमेंट उनको फ़रोख़्त करती है उनका इस्तेमाल जाइज़ है या नहीं।

इरशाद : ज़ुल्मन बनवाई गई हैं ना जाइज़ है।

अर्ज़ : पागल ख़ाना की अशिया का भी क्या यही हुक्म है।

इरशाद : जो वाक़े में पागल हैं उनको एक जगह पर रखना ज़ुल्म नहीं बल्कि ख़लाइक़ को फाइदा पहुंचाना है और काम जो उन से लेते हैं यह रोटी कपड़े के एवज़।

अर्ज़ : ओझड़ी खाना कैसा है।

इरशाद : मकरूह है।

अर्ज़ : तफ़्रीहन झूला झूलना कैसा है।

इरशाद : शारे आम पर न हो मकान में हो कुछ हरज नहीं यह तो बदन की रियाज़त है बाज़ अमराज़ में अतिब्बा मुफ़ीद बताते हैं।

अर्ज़ : हुज़ूर औरतों को भी जाइज़ है।

इरशाद : कोई महरिम न हो, अगर घर के अन्दर हों और गाना न गाएं तो उनके वास्ते भी जाइज़, उम्मुल-मुमिनीन सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं मुझे अपने निकाह की कोई ख़बर न थी में अपने मकान में झूला झूल रही थी कि मेरी मां मुझ को उठा कर ले गईं।

अर्ज़ : कुफ़्फ़ार के जनाज़े के साथ जाना कैसा है।

इरशाद : अगर इस एतक़ाद से जाएगा कि उसका जनाज़ा शिर्कत के लाइक़ है तो काफिर हो जाएगा और यह नहीं तो हराम है हदीस में फरमाया गया अगर काफिर का जनाज़ा आता हो तो हट कर चलना चाहिए कि शैतान आगे-आगे का शोअ्ला हाथ में लिए उछलता कूदता खुश होता हुआ चलता है कि मेरी मेहनत एक आदमी पर वसूल हुई।

अर्ज़ : हिन्दुओं के राम लीला वग़ैरह देखने जाना कैसा है।

तरजमा : मुसलमान हुए हो तो पूरे मुसलमान हो जाओ शैतान की पैरवी न करो वह तुम्हारा ज़ाहिर दुशमन है हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने सलाम रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने इस्तिदआ की कि अगर इजाज़त

....

अर्ज़ : हुज़ूर अक़्दे अनामिल भी हदीस में आया है। OK

इरशाद : कोई ख़ास तरीक़ा उसका हदीस में मज़्कूर नहीं अल्बत्ता एक हदीस में है। *आक़्दनल-अनामिला फ़इन्नहुन्ना मस्ऊलाते मुस्तनतेक़ात*। पूरों पर ज़िक्रे इलाही का शुमार करो कि उन से सवाल

....

होना है यह बोलेंगे।

भागता है और रूहन मदीना तैयबा से ३६ मील है और वह वक़्त होता है दख़ल शैतान का जिस वक़्त मुंकर नकीर सवाल करते हैं। *मन रब्बुका* तेरा रब कौन है यह लईन दूर से खड़ा इशारा करता है अपनी तरफ़ कि मुझको कह दे जब अज़ान होती है भाग जाता है वसवसा नहीं होता फिर सवाल करते हैं *मा दीनुका* तेरा दीन क्या है उसके बाद सवाल करते हैं *मा तकूलु फ़ी हाज़र्रजुल* उनके बारे में क्या कहता है अब न मालूम कि सरकार खुद तशरीफ़ लाते हैं या रौज़ा मुक़द्दसा से पर्दा उठा दिया जाता है शरीअ़त ने कुछ तफ़्सील न बताई और चूंकि इम्तिहान का वक़्त है इसलिए *हाज़न्नबी* न कहेंगे *हाज़र्रजुल* कहेंगे।

OK

अर्ज़ : यह ज़मीन क़्यामत के रोज़ दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी।

इरशाद : हां उन ज़मीन व आसमान का दूसरे ज़मीन व आसमान से बदला जाना तो कुरआने अज़ीम से साबित है इरशाद होता है। *यौमा तुबद्दिलुल अरज़ु ग़ैरल-अर्ज़े वस्समावाते वबरज़ुल्लाहा अल-वाहिदुल- क़ह्हार*। जिस दिन बदल जाएगी यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से और आसमान भी और खुल जाएंगे (क़ब्रों से लोग) अल्लाह वाहिदे क़ह्हार के लिए मगर आसमान के लिए यह नहीं मालूम कि वह आसमान काहे का होगा हां ज़मीन के बारे में सही हदीस आई है जिस में है कि आफ़ताबे क़्यामत के दिन सवा मील पर आ जाएगा सहाबी जो उसके रावी हैं फरमाते हैं मुझे नहीं मालूम कि मील से मुराद मील मसाफ़त है या मील सुर्मा (फिर फरमाया) अगर मील मसाफ़त ही मुराद है तो भी कितना फासिला है आफताब चार हज़ार बरस के फासिला पर है और फिर उस तरफ़ पीठ किए है उस रोज़ कि सवा मील पर होगा और उस तरफ़ मुंह किए होगा उस रोज़ की गर्मी का क्या पूछना उसी हदीस में है कि ज़मीन लोहे की कर दी जाएगी (फिर फरमाया) और जन्नत में चांदी की ज़मीन हो जाएगी और यह ज़मीन उस्अत क्या रखती है उन तमाम इंसानों जानवरों के लिए जो रोज़े अज़ल से रोज़े आख़िर तक पैदा हुए होंगे हदीस में है कि रहमान बढ़ाएगा ज़मीन को जिस तरह रोटी बढ़ाई जाती है उस वक़्त करवी शक्ल पर है इसलिए उसकी गोलाई उधर की अशिया को हाइल है और उस वक़्त ऐसी हम्वार कर दी जाएगी कि

लग जाना सही है।

इरशाद : हां सैयदना सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम जिन्नों से बैतुल-मक़्दिस बनवा रहे थे और आपका क़ायदा यह था कि खुद खड़े हो कर काम लेते थे अगर आप वहां तशरीफ़ फरमा न होते तो वह मेअ्मार शरारत करते थे अभी एक साल का काम बाक़ी थी कि आपके इंतिक़ाल का वक़्त आ गया आपने गुस्ल फरमाया कपड़े नए पहने खुशबू लगाई और इसी तरह तशरीफ़ लाए और असा पर तकिया फरमा कर खड़े हो कर खड़े हो गये इज़्राईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने आपकी रूह क़ब्ज़ कर ली आप इसी तरह असा पर टेक लगाए रहे पहले तो जिन्नों की रात को फुर्सत मिल भी जाती थी अब दिन रात बराबर काम करना पड़ता था हज़रत हर वक़्त खड़े ही रहे थे और इजाज़त मांगने की किसी में हिम्मत न थी नाचार साल भर तक यक्लख़्त रात दिन बराबर काम किया अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के अज्साम बेऐनिहा वैसे ही रहते हैं उनमें कोई तग़ैयुर नहीं आता सुलेमान अलैहिस्सलातु वस्सलाम का जिस्मे मुबारक भी इसी तरह रहा जब काम पूरा हो चुका दीमक को हुक्म हुआ उस ने आप के असा को खाना शुरू किया जब असा कमज़ोर हुआ आप नीचे तशरीफ़ लाए जिन पहले ग़ैब के इल्म का अदआ रखते *तबनियतुल-जिन्ने इन लौ कानू यअ्लमूनल-ग़ैबा मा लबिसू फ़िल-अज़ाबिल-मुहीन*। खुल गया जिन्नों का हाल कि अगर ग़ैब जानते क्यों रहते एक साल सख़्त अज़ाब में।

OK

अर्ज़ : क्या हुज़ूर हैवानात भी नातिक़ हैं।

इरशाद : बिला शुबह।

अर्ज़ : इंसान को और हैवानात से तमीज़ नातिक़ ही थी नातिक़ ही फसल है और फसल का दो जिन्सों में इश्तिराक मुहाल।

इरशाद : यह तमीज़ किस के नज़्दीक है जाहिल फलासफ़ा हुमक़ा के नज़्दीक हर शय नातिक़ है शजर, हजर, दीवार व दर सब नातिक़ हैं नस है। *क़ालू अन्तक़नल्लाहु अल्लज़ी अन्तक़ा कुल्ला शैइन*। आज़ा कहेंगे कि हम को उस अल्लाह ने नातिक़ किया जिसने हर शय को नातिक़ कर दिया और नुसूस का उनके ज़वाहिर पर हमल वाजिब बिला

एतराज़ व जवाब

वाक़्या हकीम बरकात अहमद मरहूम

हिस्सा दोम

अल्हम्दु लिल्लाह! यह जनाज़-ए-मुबारका मैंने पढ़ा।

इस इबारत का हासिल सिर्फ़ यह है कि आला हज़रत फाज़िले बरैलवी ने एक मक़्बूल बारगाहे रिसालत हकीमे बरकात अहमद साहब मरहूम की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने पर मसर्रत का इज़्हार किया और हम्द बारी बजाए लाए न यह कि आला हज़रत ने इस ख़्वाब की बिना पर जो मौलाना बरकात अहमद साहब के बारे में किसी खुदा रसीदा ने देखा था खुद को हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इमाम तसव्वुर कर लिया और उस पर फ़ख़्र किया यह मुख़ालिफ़ीन का इफ़्तरा और महज़ बकवास है उस पर अल-मल्फ़ूज़ की इबारत का कोई लफ़्ज़ दलालत नहीं करता।

हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम का अपने किसी उम्मती पर करम फरमाते हुए उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ना कोई बईद नहीं लेकिन यह लाज़िम नहीं कि यह नमाज़े जनाज़ा ज़ाहिरी नमाज़े जनाज़ा की जमाअत में शामिल हो कर ही अदा की जाए और अगर बिल-फ़र्ज़ साथ भी हो तो क्या इस्तेहाला किया हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी हयाते ज़ाहिरी में हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने औफ़ और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुमा की इक़्तिदा में नमाज़ें अदा नहीं फरमाईं।

यहां यह भी साबित हो गया कि इमाम का मोम से न अफ़्ज़ल होना ज़रूरी है न तसावी और यह कि नबी ग़ैर नबी की इक़्तिदा में नमाज़ अदा कर सकता है अल-ग़रज़ मुख़ालेफ़ीन का एतराज़ बिल्कुल लचर है।

❖❖❖